हिंदी दैनिक

नागपुर मेट्रो समाचार

BCN GROUP

RNI.NO - MAHHIN/2019/78960 | P.NO : NPCITY/516/2021-2023 | नागपुर, शनिवार, 11 जनवरी 2025 | अंक 90/ वर्ष 6 / पृष्ठ 8+4 / कीमत 3/-

कर्मवीर दादासाहेब के विचारों और कार्यों को अगली पीढ़ी तक पहुंचाएं: मुख्यमंत्री फडणवीस

देवेंद्र फडणवीस नरेंद्र मोदी का उत्तराधिकारी: विजय वडेट्टीवार

चंद्रपुर, सुनील तायडे

कर्मवीर दादासाहेब कन्नमवार का जन्म अपेक्षाकृत पिछड़े, मेहनती समाज में हुआ था, लेकिन उन्होंने अपनी मेहनत से अपनी योग्यता साबित की। दादासाहेब एक दूरदर्शी नेता थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन राज्य और जिले के विकास के लिए समर्पित कर दिया। मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने विचार व्यक्त किया कि ऐसे नेताओं के विचारों और कार्यों को अगली पीढ़ी तक पहुंचाना आवश्यक है। मुख्यमंत्री फडणवीस ने कहा कि लोकनेता दादासाहेब कन्नमवार की 125 वीं जयंती के अवसर पर आज यहां उपस्थित होकर उन्हें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। फडणवीस ने कहा, दादा साहब ने देश के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था। महात्मा गांधी और लोकमान्य तिलक के विचारों का उन पर बहुत प्रभाव था। भारत-चीन युद्ध के दौरान महाराष्ट्र के प्रथम मुख्यमंत्री, स्वर्गीय यशवंतराव चव्हाण को देश के रक्षा मंत्री के पद की जिम्मेदारी दिए जाने के बाद महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बने। ऐसे कठिन समय में कन्नमवार ने राज्य की बागडोर संभाली। वह इस पद पर 1 वर्ष और 4 महीने तक रहे। वह युद्ध का समय था। ऐसी स्थिति में दादा साहब ने जनता से आर्थिक सहायता देने की अपील की। उस समय चंद्रपुर जिले और महाराष्ट्र ने उनकी अपील पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए देश को सोने के सिक्के और वित्तीय सहायता दान की थी।

कांग्रेस नेता और पूर्व नेता प्रतिपक्ष विधायक विजय वडेट्टीवार ने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की तारीफ करते हुए कहा कि उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का उत्तराधिकारी बनना चाहिए और देश का नेतृत्व करना चाहिए। वे स्थानीय प्रियदर्शिनी इंदिरा गांधी में आयोजित एक समारोह में बोल रहे थे। पूर्व मुख्यमंत्री कर्मवीर मा सा कन्नमवार की 150वीं रजत जयंती के उपलक्ष्य में सभागार का उद्घाटन किया गया।

इस अवसर पर वडेट्टीवार ने कहा कि कांग्रेस नेता और पूर्व मुख्यमंत्री कर्मवीर कन्नमवार की जन्म शताब्दी समारोह में शामिल होना फडणवीस की उदारता का प्रतीक है। फडणवीस को मोदी का उत्तराधिकारी होना चाहिए, मैं दोनों जिलों के विकास का समर्थन करता हूं। राजनीति में यह ऐसा है जैसे वरिष्ठ लोग कनिष्ठों से सीख रहे हों। चूंकि एक मराठी व्यक्ति महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री बन रहा है, इसलिए माननीय मंत्री कन्नमवार ने मुख्यमंत्री पद के लिए यशवंतराव चव्हाण का समर्थन किया था। कर्मवीर मा सा कन्नमवार को राज्य में प्रथम उपमुख्यमंत्री बनने का गौरव प्राप्त हुआ। कन्नमवार चंद्रपुर और गढ़चिरौली जिलों को जोड़ने वाले वैनगंगा नदी पर पुल को मंजूरी देने के लिए जिम्मेदार थे। फडणवीस ने मुल, मरोदा में राजनीतिक बारीकियां सीखीं। चंद्रपुर जिले में अब देखभाल करने वाला कोई नहीं है। इसलिए फडणवीस को चंद्रपुर और गढ़चिरौली जिले गोद लेने चाहिए। फडणवीस देश का नेतृत्व करने जा रहे हैं। इसके बाद वडेट्टीवार ने यह भी कहा कि उन्हें जिले में एक "वारा" व्यक्ति को अपने साथ रखना चाहिए। शासकीय मेडिकल कॉलेज, चंद्रपुर में पूर्व मुख्यमंत्री कर्मवीर माननीय मुख्यमंत्री स्व. वडेट्टीवार ने यह भी कहा कि कन्नमवार का नाम लिया जाना चाहिए।

महाराष्ट्र के दूसरे माजी मुख्यमंत्री मा.सा. कन्नमवार की शतकोत्तर रजत जयंती समारोह मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में भाजपा के वरिष्ठ नेता और विधायक सुधीर मुनगंटीवार अनुपस्थित रहे। वक्ताओं के भाषणों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मुनगंटीवार का कई बार जिक्र किया गया। कार्यक्रम भले ही कन्नमवार जी के सम्मान में था, लेकिन चर्चा का केंद्र मुनगंटीवार ही रहे। निमंत्रण पत्रिका में मुनगंटीवार का नाम नीचे रखा गया था, जिससे उनके नाराज होने की चर्चा जोरों पर थी। माना जा रहा है कि इसी नाराजगी के चलते उन्होंने कार्यक्रम में भाग नहीं लिया।

गंगासागर मेले को राष्ट्रीय दर्जा देने की मांग

कोलकाता

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने दावा किया कि गंगासागर मेला कुंभ मेले से भी बड़ा है ऐसे में केंद्र सरकार को इसे राष्ट्रीय मेले का दर्जा देना चाहिए. उन्होंने कहा कि वो काफी लंबे समय से गंगासागर को राष्ट्रीय मेला बनाने की मांग कर रही हैं. लेकिन अभी तक केंद्र ने दर्जा नहीं दिया. सीएम ने कहा कि उनकी सरकार आने के बाद से इस मेले का खर्चा राज्य सरकार की तरफ से किया जाता है. ममता बनर्जी ने कहा कि केंद्र सरकार कुंभ मेले के आयोजन के लिए हजारों करोड़ रुपए मुहैया कराती है.

लेकिन पश्चिम बंगाल सरकार को मकर संक्रांति के मौके पर गंगा नदी और बंगाल की खाड़ी के संगम पर कपिल मुनि मंदिर में आयोजित होने वाले वार्षिक गंगासागर मेले के लिए सभी प्रावधान करने होते हैं. बनर्जी ने यहां गंगा नदी (हुगली) के तट पर मेले का उद्घाटन करने के बाद कहा कि हम पिछले 10 साल से गंगासागर मेले को राष्ट्रीय मेले का दर्जा दिलाने की नाकाम कोशिश कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि यह कुंभ मेले से कम नहीं बल्कि उससे भी बड़ा है.

'गंगासागर मेला जाने के लिए रास्ता कठिन है'

सीएम ने कहा कि अगर कठिनाई के हिसाब से देखें तो भी गंगासागर मेला कुंभ मेले से ज्यादा कठिन है. क्योंकि कुंभ मेले में लोग बस, ट्रेन और कार से जा सकते हैं, लेकिन गंगासागर मेला जाने के लिए रास्ता बहुत कठिन है. उन्होंने कहा कि जब 2011 में टीएमसी सत्ता में आई थी तो तीर्थयात्रा टैक्स वसूला जाता था. लेकिन हमारे आने के बाद इसे बंद कर दिया गया और मेले का खर्च राज्य सरकार ने उठाया. सीएम ने कहा कि सरकार ने यहां आने वाले तीर्थयात्रियों के लिए बायो टॉयलेट, आवास सभी तरह की व्यवस्था की.

'मैं सेटबैक पर रोने वाला इंसान नहीं': प्रधानमंत्री मोदी

नई दिल्लीः

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ज़ेरोधा के सह-संस्थापक निखिल कामथ के साथ अपने पहले पॉडकास्ट में कई मुद्दों पर खुलकर बात की। पॉडकास्ट में पीएम के रूप में उनके विभिन्न कार्यकालों के बारे में पूछे जाने पर पीएम मोदी ने कहा कि पहले कार्यकाल में लोग मुझे समझने की कोशिश कर रहे थे और मैं दिल्ली को समझने की कोशिश कर रहा था। दूसरे में टर्म में अतीत के नजरिए से सोचता था।

2047 तक सभी समस्याओं का समाधान हो

पीएम मोदी ने कहा कि तीसरे टर्म में मेरी सोच बदल गई है। मेरा मनोबल ऊंचा है। मैं विकसित भारत के लिए 2047 तक सभी समस्याओं का समाधान चाहता हूं। सरकारी योजनाओं की 100% डिलीवरी होनी चाहिए। यही वास्तविक सामाजिक न्याय और धर्मनिरपेक्षता है। इसके पीछे प्रेरक शक्ति है - AI- 'एस्पिरेशनल इंडिया'।

मैं सेटबैक पर रोने वाला इंसान नहीं

पॉडकास्ट में पीएम मोदी ने कहा कि मैं अपयश से नहीं डरता। मैं सेटबैक पर रोने वाला इंसान नहीं हूं। मुझे प्रधानमंत्री बनने का दायित्व मिला तो उसे निभा रहा हूं। राजनीति में हर पल रिस्क लेना पड़ता है। मुझे रिस्क लेने वाला इंसान चाहिए। मैं रिस्क लेने वाले युवाओं का साथ दूंगा। पीएम मोदी ने कहा कि कुछ पाने की इच्छा से राजनीति में न आएं। राजनीति को प्रतिष्ठा देने वाले लोग आगे आएं। मैं सामान्य परिवार से आता हूं। अगर मैं प्राइमरी का टीचर भी बन जाता तो मेरी मां खुश होती। जब मैं मुख्यमंत्री बना तो हैरान हो गया। मैं कभी प्रधानमंत्री बनूंगा यह सोचा तक नहीं था।

खुद को गाली देने के सवाल पर क्या कहा

विपक्षी नेताओं की तरफ से आलोचना को लेकर पीएम मोदी ने बड़ी बात कही। पीएम मोदी ने कहा कि मैं एक अहमदाबादी हूं..गाली दे रहा है ना, कुछ लेकर तो नहीं जा रहा?

बचपन के दोस्तों को सीएम हाउस क्यों बुलाया

पीएम मोदी ने कहा कि मैं वही हूं, जो वर्षों पहले गांव छोड़कर गया था, मुझमें बदलाव नहीं आया। निखिल कामथ के साथ podcast में पीएम नरेन्द्र मोदी ने बताया कि गुजरात का मुख्यमंत्री बनने के बाद जब बचपन के दोस्तों को सीएम हाउस बुलाया तो क्या हुआ।

कार्ति चिदंबरम की बढ़ी परेशानी

नई दिल्ली.

पूर्व वित्त मंत्री पी. चिदंबरम के बेटे और कांग्रेस सांसद कार्ति चिदंबरम की परेशानी और बढ़ गई है। सीबीआइ ने उनके खिलाफ भ्रष्टाचार का एक नया मामला दर्ज किया है। कार्ति पर आरोप लगा है कि उन्होंने मादक पेय कंपनी डियाजियो स्कॉटलैंड को उसकी व्हिस्की की शुल्क मुक्त बिक्री पर प्रतिबंध से राहत दी थी। सीबीआई की प्राथमिकी में कहा गया है कि यह मामला एडवांटेज स्ट्रेटेजिक कंसल्टिंग प्राइवेट लिमिटेड को डियाजियो स्कॉटलैंड और सिकोइया कैपिटल्स द्वारा किए गए संदिग्ध भुगतान से संबंधित है। यह कार्ति चिदंबरम और उनके करीबी सहयोगी एस. भास्करमन द्वारा नियंत्रित एक इकाई है।

क्रिकेट और टेनिस के सट्टेबाजों के घर ईडी की रेड

नई दिल्ली. उज्जैन पुलिस ने जब क्रिकेट का सट्टा कर रहे कुछ बदमाशों को जून 2024 में पकड़ा तो उनके पास से करोड़ों की नगदी और क्रिकेट सट्टेबाजी से जुड़े लोगों के नाम सामने आए. इसके बाद प्रवर्तन निदेशालय ने क्रिकेट और टेनिस की सट्टेबाजी में शामिल लोगों के घरों पर छापा मारना शुरू किया. इसी कड़ी में इंदौर के संजय अग्रवाल के घर भी छापेमारी की कार्रवाई की गई. अग्रवाल के लॉकर में 3 करोड़ 35 लाख का सोना पाया गया है. उज्जैन एसपी प्रदीप कुमार शर्मा ने बताया कि जून 2024 में क्रिकेट के सट्टे के बड़े अवैध कारोबार की शिकायत मिली थी, जिसके बाद पुलिस ने छापा मार कर पीयूष चोपड़ा और उसके साथियों को गिरफ्तार किया था. इसके बाद आरोपी पीयूष के बताए गए ठिकाने से करोड़ों रुपये की नगद राशि भी बरामद की गई थी. उन्होंने कहा कि पीयूष चोपड़ा के क्रिकेट के तार इंदौर से भी जुड़े हुए थे. पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक जब करोड़ों रुपये की नकदी का मामला सामने आया तो प्रवर्तन निदेशालय ने भी जांच पड़ताल शुरू कर दी. बताया जाता है कि पीयूष चोपड़ा के घर से विदेशी करेंसी भी मिली थी. इसके बाद पूछताछ के दौरान इंदौर के कांग्रेस नेता गोलू अग्निहोत्री का नाम सामने आया. गोलू अग्निहोत्री के घर छापा मार कर करोड़ों रुपये की चल-अचल संपत्ति का पता लगा लिया गया. इसी कड़ी में संजय अग्रवाल का भी नाम सामने आया था. अब संजय अग्रवाल के लॉकर से 3 करोड़ 35 लाख रुपये का सोना बरामद किया गया है.

करोड़ों का सोना क्यों रखते थे सट्टेबाज?

सटोरियों का कारोबार मध्य प्रदेश और भारत ही नहीं बल्कि विदेशों में भी फैला हुआ था. इसी के चलते कई सट्टेबाजों के पास से अक्सर विदेशी करेंसी भी बरामद होती है. क्योंकि सोने की इंटरनेशनल वैल्यू है, इसलिए सट्टेबाजों किसी भी आपातकालीन स्थिति में देश छोड़कर बाहर भागने और पैसे के लेनदेन में सोने का इस्तेमाल करते आए हैं.

10 हजार करोड़ का खेल, 269 बैंकों से रकम ट्रांसफर

ठाणे : प्रवर्तन निदेशालय ने एक बड़े घोटाले का पर्दाफाश किया है, जिसके तहत एक ही आदमी ने 10 हजार करोड़ रुपये की रकम विदेश भेज दी। ठाणे के रहने वाले जितेंद्र पांडेय पर आरोप है कि उसने 269 बैंक खातों के जरिए इस पूंजी को ट्रांसफर किया। यही नहीं इस रकम के लिए उसने 98 डमी कंपनियां बनाईं, 12 प्राइवेट कंपनियां भी बनाईं। इन्हीं कंपनियों के नाम पर रकम जुटाई गई और फिर उसे विदेशों में ट्रांसफर कर दिया गया। आरोपी ने हॉन्गकॉन्ग, सिंगापुर और थाइलैंड में स्थित कंपनियों के खातों में यह मोटी रकम भेजी। माल भाड़े के नाम पर यह रकम ट्रांसफर कर दी गई। इन्हीं फर्जी कंपनियों के नाम पर 269 बैंक खाते भी खुलवाए गए और फिर फ्रॉड हुआ।

दरअसल प्रवर्तन निदेशालय ने 2 जनवरी को ही मुंबई, ठाणे और

वाराणसी की 11 लोकेशंस पर रेड मारी थी। यह मामला विदेशों में अवैध तरीके से रकम ट्रांसफर का था। इसी की जांच के दौरान सामने आया कि कैसे जितेंद्र पांडेय नाम के शख्स ने 10 हजार करोड़ का बड़ा खेल कर दिया। रेड के दौरान एजेंसी ने एक करोड़ रुपये कैश और जूलरी बरामद किए। इसके अलावा कुछ दस्तावेज भी बरामद हुए हैं, जिनसे बड़े पैमाने पर अचल संपत्ति की जानकारी मिली है। दरअसल ठाणे पुलिस ने जितेंद्र पांडेय एवं अन्य कुछ लोगों के खिलाफ एफआईआर की थी। इसी के आधार पर ईडी ने जांच तेज की थी। ईडी का कहना है कि इन लोगों ने शेल कंपनियों का एक नेटवर्क बनाया था और उनके नाम पर ही बैंक खाते खुलवाए गए थे। फिर इन बैंक खातों के जरिए 10 हजार करोड़ से ज्यादा की रकम विदेशों में भेजी गई। ठाणे पुलिस की इकनॉमिक ऑफेंसेज विंग ने जितेंद्र पांडेय और कुछ अन्य लोगों को अरेस्ट किया था। प्रवर्तन निदेशालय ने अब तक की जांच के आधार पर कहा है कि विदेशों में माल भेजने या मंगाने के नाम पर यह सब खेल हुआ है। अब तक यह जानकारी नहीं मिली है कि यह रकम किन लोगों की है, जो ट्रांसफर की गई। ईडी के अनुसार जितेंद्र पांडेय और उसके साथियों को कुछ चार्टर्ड अकाउंटेंट मदद कर रहे थे। फिलहाल इस मामले की जांच तेज है और कुछ चौंकाने वाले खुलासे आने वाले दिनों में और हो सकते हैं।

शराब तस्करों को दबोचा

नई दिल्ली. आगरा पुलिस और आबकारी विभाग की तरफ से शराब तस्करों पर अंकुश लगाने के लिए कार्रवाई जारी है. इसी क्रम में एक बार फिर पुलिस और आबकारी विभाग ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए दो कारों से अवैध शराब बरामद किया है. वाहन चेकिंग के दौरान दो कारों से शराब का जखीरा बरामद हुआ है. दरअसल, पुलिस और आबकारी विभाग की टीम संयुक्त कार्रवाई करते हुए आगरा कानपुर हाइवे पर वाहनों की चेकिंग कर रही थी. इस दौरान अधिकारियों ने मौके से गुजर रही दो संदिग्ध कारों को रोका और उनकी तलाशी ली. कारों की तलाशी के दौरान अवैध शराब का जखीरा बरामद हुआ, ये देखकर अधिकारी भी दंग रह गए. फिलहाल दोनों कारों से बरामद अवैध शराब के जखीरे को पुलिस ने कब्जे में ले लिया गया है और कारों के ड्राइवरों को भी हिरासत में ले लिया गया है.

पूर्वांचल के लोगों का अपमान बर्दाश्त के काबिल नहीं'

नई दिल्लीः

बिहार की सत्ताधारी जनता दल (यूनाईटेड) ने पूर्वांचल के लोगों को लेकर दिए गए बयान को लेकर आम आदमी पार्टी के संस्थापक अरविंद केजरीवाल की आलोचना की है। जेडीयू ने गुरुवार को कहा कि अरविंद केजरीवाल की ओर से बार-बार पूर्वांचल के लोगों का अपमान बर्दाश्त के काबिल नहीं है। इसके लिए उन्हें तुरंत माफी मांगनी चाहिए। जेडीयू ने आगे कहा कि दिल्ली विधानसभा चुनाव में पूर्वांचल के लोग इस अपमान का हिसाब चुकता करेंगे। जदयू की यह प्रतिक्रिया केजरीवाल के उस बयान के बाद आई, जिसमें उन्होंने भाजपा पर नई दिल्ली विधानसभा क्षेत्र में मतदाता सूची में हेराफेरी का आरोप लगाया और निर्वाचन आयोग में इसकी शिकायत दर्ज कराई।

केजरीवाल ने नए नाम जोड़ने के लगाए आरोप

बता दें कि आम आदमी पार्टी के संस्थापक अरविंद केजरीवाल ने आरोप लगाया है कि भाजपा से जुड़े लोगों ने मतदाता सूची में 13,000 नये मतदाताओं के नाम जोड़ने के लिए आवेदन किया है। उन्होंने अपने पक्ष में मतदान को प्रभावित करने के लिए 5,500 मतदाता प्रविष्टियों को रद्द करने की मांग की है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे. पी. नड्डा ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म 'एक्स' पर एक वीडियो शेयर किया है। इसमें केजरीवाल मीडिया से बातचीत में कथित तौर पर यह कहते हुए सुने जा सकते हैं कि "पिछले 15 दिन में 13,000 वोट बनने के आवेदन आए हैं। जाहिर तौर यह यूपी, बिहार और आसपास के राज्यों से ला-लाकर फर्जी वोट बनवा रहे हैं ये लोग।"

संजय झा ने कहा- दिल्ली आपकी जागीर नहीं

दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री पर पलटवार करते हुए जद (यू) के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा ने उनसे सवाल किया कि उन्हें बिहार-यूपी के लोगों से आपको इतनी नफरत क्यों है। उन्होंने 'एक्स' पर कहा, "आपको नहीं भूलना चाहिए कि दिल्ली आपकी जागीर नहीं, देश की राजधानी है, और सभी देशवासियों की है। बिहार-यूपी के लोगों ने अपनी मेहनत और प्रतिभा के बल पर दिल्ली ही नहीं, दुनियाभर में मुकाम हासिल किया है।" केजरीवाल पर तंज कसते हुए उन्होंने कहा कि आप संयोजक ने अपने लिए जो 'शीश महल' बनवाया है, उसमें दिल्ली में रहने वाले बिहार और उत्तर प्रदेश के लोगों के टैक्स के पैसे भी लगे हैं। उन्होंने कहा, "आपके द्वारा बिहार-यूपी के लोगों का बार-बार अपमान बर्दाश्त के काबिल नहीं है। आपको तुरंत माफी मांगनी चाहिए।"

सरकारी खजाना भरने के लिए शराब बिक्री लाइसेंस बढ़ाने के जोरदार कदम

प्रिय बहन के कारण राजकोष पर पड़ने वाले तनाव को कम करने का भी यह उपाय है

मुंबईः

राज्य का राजस्व बढ़ाने के लिए शराब बिक्री लाइसेंस बढ़ाने की कवायद शुरू हो गई है. इसकी विपक्ष ने काफी आलोचना की थी. फिर भी राज्य सरकार ने पांच सदस्यीय कमेटी का गठन किया है. इसके लिए सरकारी आदेश जारी कर दिया गया है. कमेटी दो महीने में सरकार को रिपोर्ट सौंपेगी. इस कमेटी की सिफारिशों पर ध्यान दिलाया गया है और क्या शराब नीति में बदलाव होगा? यही चर्चा है. लड़की बहिन योजना राज्य सरकार के खजाने पर दबाव डाल रही है। इसलिए दो दिन पहले कृषि मंत्री माणिकराव कोकाटे ने स्वीकार किया कि किसानों के हित की योजनाएं बंद हो गई हैं. इससे पहले राज्य सरकार ने खर्चों को संतुलित करने के लिए राजस्व वृद्धि का तरीका परखना शुरू कर दिया है. कुछ दिन पहले उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने आबकारी विभाग की बैठक ली थी. इसमें अधिकारियों ने आय बढ़ाने के लिए कुछ उपाय सुझाए थे। उसमें बताया गया कि प्रस्ताव दिया गया है कि शराब बेचने के लाइसेंस को नये सिरे से बढ़ाया जाये. विपक्षी

दलों ने राज्य सरकार की आलोचना की थी.

उसके बाद अब राज्य सरकार ने राज्य उत्पाद शुल्क के माध्यम से राज्य के राजस्व को बढ़ाने के लिए नए उपाय या सिफारिशें प्रस्तुत करने के लिए अतिरिक्त मुख्य सचिव आवास विभाग की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया है। इस समिति में अपर मुख्य सचिव वित्त विभाग, अपर मुख्य सचिव राज्य उत्पाद शुल्क आयुक्त (राज्य कर) वस्तु एवं सेवा कर तीन सदस्य हैं तथा राज्य उत्पाद शुल्क आयुक्त इस समिति के सदस्य सचिव हैं।

कोरोना संकट के दौरान शराब की बिक्री ने डगमगाती अर्थव्यवस्था को सहारा दिया

चार साल पहले कोरोना का बड़ा संकट था. लगभग सभी उद्योग-धंधे ठप पड़ गये। इससे महाराष्ट्र की अर्थव्यवस्था हिल गई. उस वक्त महाविकास अघाड़ी सरकार ने शराब पर टैक्स और ड्यूटी काफी हद तक बढ़ा दी थी. इसका अपेक्षित लाभ हुआ. शराबियों द्वारा भारी मात्रा में महंगी शराब खरीदने से अर्थव्यवस्था को समर्थन मिला।

माविआ सरकार ने किराना दुकानों के साथ-साथ मॉल में भी शराब बेचने की कोशिश की थी

उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली माविया सरकार ने राजस्व बढ़ाने के लिए 2021 में मॉल, किराना दुकानों में शराब बेचने का फैसला किया था। इसका सांसद संजय राउत समेत अधिकांश माविया नेताओं ने पुरजोर समर्थन किया. हालाँकि, समाज के विभिन्न स्तरों पर भारी विरोध के कारण उस निर्णय को लागू नहीं किया जा सका।

कमेटी क्या करेगी?

समिति विदेशी शराब बनाने की नीति, उत्पाद शुल्क और कर संग्रह बढ़ाने के लिए लागू किए जाने वाले उपायों और राज्य उत्पाद शुल्क विभाग के आयुक्त द्वारा सुझाई गई नीति सिफारिशों का अध्ययन करेगी। कमेटी दो महीने में अपनी सिफारिशें सरकार को सौंपेगी.

संभल के कुएं में पूजा से सुप्रीम कोर्ट की रोक

नई दिल्ली. संभल में शाही जामा मस्जिद के पास कुएं को हरि मंदिर का कुआं कहने वाले नगरपालिका के नोटिफिकेशन पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी है. मस्जिद कमिटी ने मामले में यथास्थिति बनाए रखने की मांग की थी. कमिटी का कहना था कि कुएं की खोदाई और उसे मंदिर का कुआं कहने से वहां पूजा शुरू हो जाएगी. कोर्ट ने उत्तर प्रदेश सरकार से स्टेटस रिपोर्ट मांगते हुए 25 फरवरी को अगली सुनवाई की बात कही. चीफ जस्टिस संजीव खन्ना की अध्यक्षता वाली बेंच ने सुनवाई के दौरान साफ किया कि कुएं का इस्तेमाल कोई भी कर सकता है. इस पर कोई रोक नहीं है. दरअसल, मस्जिद पक्ष के वकील इसे सिर्फ मस्जिद का कुआं बता रहे थे और वहां किसी भी तरह की दूसरी गतिविधि पर रोक की मांग कर रहे थे. लेकिन कोर्ट ने कहा कि यह सार्वजनिक जगह पर बना कुआं है. मस्जिद के अलावा इसका इस्तेमाल दूसरे लोग भी कर सकते हैं.

यूपी सरकार के लिए पेश एडिशनल सॉलिसिटर जनरल के एम नटराज ने कहा कि कुआं सार्वजनिक जमीन पर है. मस्जिद पक्ष के वकील ने कहा कि आधा कुआं मस्जिद के भीतर है, आधा बाहर. कोर्ट ने फिलहाल कुएं को लेकर यथास्थिति बनाए रखने को कहा. सुप्रीम कोर्ट ने यह भी साफ किया है कि उसका आदेश सिर्फ एक कुएं तक सीमित है जो मस्जिद के प्रवेश द्वार के पास है. संभल में जिन दूसरे कुओं और बावड़ियों की प्रशासन खोदाई करवा रहा है.

वी ने सर्विस लायन्सगेट प्ले के साथ मिलाया हाथ

नई दिल्ली. भारत के अग्रणी दूरसंचार सेवा प्रदाता वी ने प्रीमियम स्ट्रीमिंग सर्विस लायन्सगेट प्ले के साथ साझेदारी की घोषणा की है, जिसके साथ उपभोक्ता टॉप-टियर कंटेंट की एक्सक्लुज़िव लाइब्रेरी का लाभ उठा सकेंगे। एक्शन ब्लॉकबस्टर्स, आईकोनिक फ्रैंचाइज़, प्रतिष्ठित फिल्मों और सीरीज़, ग्लोबल अवॉर्ड्स, एक्सक्लुज़िव प्रीमियर तथा डब्ड कंटेंट की व्यापक रेंज के साथ लायन्सगेट एंटरटेनमेन्ट का बेजोड़ अनुभव प्रदान करने का वादा करता है। इस साझेदारी के साथ वी का ओटीटी पोर्टफोलियो और भी विस्तारित हो गया है जो उपभोक्ताओं को किफ़ायती दाम पर हॉलीवुड फिल्मों, ओरिजिनल सीरीज़, इंटरनेशन टाइटल्स की प्रीमियम लाइब्रेरी का अनूठा अनुभव प्रदान करेगा। वी मुवीज़ एण्ड टीवी उपभोक्ताओं की मनोरंजन संबंधी विभिन्न ज़रूरतों को पूरा करने के लिए वी मुवीज़ एण्ड टीवी को डिज़ाइन किया गया है, जहां उपभोक्ता सिंगल ऐप और सिंगल सब्सक्रिप्शन के ज़रिए टॉप ओटीटी का आनंद उठा सकते हैं। वे कंटेंट की व्यापक रेंज का लुत्फ़ उठा सकते हैं, जिसमें स्पोर्ट्स के लिए डिज़नी प्लस हॉटस्टार, सोनी लिव, ज़ी 5, फैनकोड और रीजनल कंटेंट के लिए सन नेक्स्ट, मनोरमा मैक्स, नम्माफ्लिक्स, क्लिक, चौपाल, और अब लायन्सगेट प्ले के साथ सर्वश्रेष्ठ हॉलीवुड शामिल हैं। ये 30 से अधिक लाईव न्यूज़ चैनलों सहित 300 से अधिक लाईव टीवी चैनल भी पेश करता है। उपभोक्ता वी मुवीज़ एण्ड टीवी ऐप के ज़रिए स्मार्टफोन, स्मार्ट टीवी और लैपटॉप या टैबलेट पर इन सभी कंटेंट का आनंद उठा सकते हैं।

लायन्सगेट प्ले के साथ, वी मुवीज़ एण्ड टीवी के यूज़र अब ग्लोबल हिट्स की व्यापक लाइब्रेरी का लुत्फ़ उठा सकते हैं जिसमें ब्लॉकबस्टर फ्रैंचाइज़ जैसे जॉन विक, द हंगर गेम्स और सॉ तथा स्टैण्डआउट टाइटल जैसे पास्ट लाईव्स, टोकयो वाईस, पेरिस हैज़ फॉलन, नॉर्मल पीपल, ऑपरेशन फॉर्च्यून, प्लेन, हिटमैन्स वाईफ्स बॉडीगार्ड, द आयरन क्लॉ, द बीकीपर, आरकेडियन आदि शामिल हैं। इसके अलावा यूज़र प्रतिष्ठित अवॉर्ड शो जैसे प्राइमटाईम एम्मी अवॉर्ड्स, गोल्डन ग्लोब्स, क्रिटिक्स चॉइस और बाफता अवॉर्ड्स का भी एक्सेस पा सकते हैं। इस तरह वी मुवीज़ एण्ड टीवी के सब्सक्राइबर सर्वश्रेष्ठ, प्रीमियम, विश्वस्तरीय एंटरटेनमेन्ट का अनुभव पा सकते हैं। लायन्सगेट प्ले के साथ यह साझेदारी इनोवेशन एवं सर्वश्रेष्ठ एंटरटेनमेन्ट उपलब्ध कराने की वी की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। अपनी पेशकश में लायन्सगेट प्ले जैसे जाने-माने प्लेटफॉर्म्स को शामिल कर वी भारतीय दर्शकों की बदलती पसंद के अनुसार बेहतरीन कंटेंट लेकर आता है।

महंगाई में सुधार के लिए आरबीआई की समीक्षा

खाद्य वितरण के आंकड़े भी शामिल

नई दिल्ली.

आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने महंगाई और विकास पूर्वानुमान में हो रही गलतियों को कम करने के लिए सभी साधनों की समीक्षा शुरू की है। उन्होंने अपनी टीम के साथ कई बैठक की है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि जो पहले अनुमान लगाए जा रहे थे, उसमें किसी तरह की गलती है या नहीं। दिसंबर की मौद्रिक नीति समिति बैठक में 2024-25 के विकास के आंकड़े को सुधार कर 7.2 प्रतिशत से कम करके 6.6 प्रतिशत किया गया। महंगाई दर का अनुमान 4.5 से बढ़ाकर 4.8 प्रतिशत किया गया। सरकार का अनुमान उससे भी कम हो गया। ऐसा तब हुआ जब जुलाई-सितंबर तिमाही में देश का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि अप्रत्याशित रूप से गिरकर 5.4 प्रतिशत हो गया था। नवंबर में मुद्रास्फीति फिर से बढ़ गई।

पुराने अनुमान के साधन और तरीकों की समीक्षा की गई है कि उन्हें जारी रखा जाए, या वापस लिया जाए। दिसंबर में कार्यभार संभालने वाले मल्होत्रा ने आरबीआई की आंतरिक टीमों से मुद्रास्फीति और विकास पूर्वानुमानों में नए डाटासेट, विश्लेषण और अनुमान शामिल करने के लिए भी कहा है। यह समीक्षा केंद्रीय बैंक के विकास और मुद्रास्फीति अनुमानों की बढ़ती जांच के बीच आई है, जो चालू वित्त वर्ष के अधिकांश समय में लक्ष्य से बाहर रहे हैं। खासकर विकास अनुमान उम्मीद से काफी कमजोर और महंगाई लक्ष्य से अधिक रही है।

आय-खर्च के रुझान समझना जरूरी

आरबीआई आय और खर्च के रुझान को बेहतर ढंग से मापने के लिए जरूरी डाटासेट बढ़ाने पर विचार करेगा। इसके लिए, छोटे डिजिटल भुगतान के रुझान के साथ-साथ खाद्य वितरण एप और ऑनलाइन टैक्सी एग्रीगेटर्स के डाटा भी शामिल हो सकते हैं। खुदरा व औद्योगिक गतिविधि का आकलन करने के लिए ईंधन उपयोग के विभिन्न घटकों का विवरण भी जोड़ा जा सकता है।

डालमिया सीमेंट ने सीमेंट रेंज का किया अनावरण

नई दिल्ली.

भारत की प्रमुख सीमेंट कंपनी डालमिया सीमेंट (भारत) लिमिटेड ने गर्व से अपने प्रमुख भारतीय बाजारों में 'रूफ, कॉलम, फाउंडेशन (आरसीएफ) एक्सपर्ट' ब्रांड के तहत अपने नए सीमेंट पोर्टफोलियो का अनावरण किया। इसके प्रमुख उत्पाद, डालमिया डीएसपी आरसीएफ एक्सपर्ट और डालमिया सीमेंट (डीसी) आरसीएफ एक्सपर्ट, उन्नत फॉर्मूलेशन और अत्याधुनिक नैनो बॉन्डिंग टेक्नोलॉजी (एनबीटी) से लैस हैं, जो आधुनिक निर्माण की बदलती जरूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।

आरसीएफ एक्सपर्ट रेंज उच्च शक्ति, बेहतर संक्षारण प्रतिरोध और समय की कसौटी पर खरी उतरने वाली मजबूत संरचनाएं सुनिश्चित करती है। डालमिया सीमेंट (डीसी), मूल ब्रांड, अपनी 80 से अधिक वर्षों की विश्वसनीय विरासत के साथ अपनी लगातार गुणवत्ता और सिद्ध विश्वसनीयता के लिए जानी जाती है, जो इसे विविध निर्माण आवश्यकताओं के लिए एक पसंदीदा विकल्प बनाती है। डालमिया डीएसपी आरसीएफ, पोर्टफोलियो में प्रीमियम पेशकश को अल्टीमेट कंक्रीट एक्सपर्ट के रूप में स्थान दिया गया है। यह एनबीटी को हाई रिएक्टिव सिलिका और पोर रिडक्शन टेक्नोलॉजी (पीआरटी) के साथ जोड़ता है, जो मजबूत छतों, कॉलम और नींव के लिए उत्कृष्ट शक्ति और स्थायित्व प्रदान करता है। इस पहल को डालमिया सीमेंट की समर्पित आरसीएफ सलाहकारों की टीम द्वारा सहयोग दिया गया है, जो निर्माण में सटीकता सुनिश्चित करने के लिए ऑन-साइट मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। डालमिया सीमेंट के देशव्यापी 50000 से अधिक चैनल भागीदारों के विशाल नेटवर्क के सहयोग से आयोजित उत्पाद अनावरण कार्यक्रम में प्रमुख चैनल भागीदारों, कांट्रैक्टरों और राजमिस्त्रियों की सक्रिय भागीदारी देखी गई।

जिस तरह से निर्माण प्रथाएं विकसित हो रही हैं, घर बनाने वाले अब तेज़ सेटिंग समय, बेहतर कार्यशीलता और पर्यावरणीय चुनौतियों के लिए बढ़ी हुई प्रतिरोधक क्षमता जैसी उन्नत सुविधाओं की तलाश कर रहे हैं। ज़मीनी स्तर पर सक्रियता और इंटरैक्टिव सत्रों ने आरसीएफ एक्सपर्ट रेंज की उन्नत सुविधाओं और बेहतर प्रदर्शन को उजागर किया। इन कार्यक्रमों में नवाचार और विकास का जश्न मनाया गया, जिससे डालमिया सीमेंट की ताकत, विश्वसनीयता और प्रदर्शन में नए उद्योग मानक स्थापित करने वाले समाधान देने की प्रतिबद्धता को बल मिला। "आरसीएफ मजबूत तो घर मजबूत" की अवधारणा को अपनाते हुए, कंपनी मजबूत, अधिक लचीले घरों के निर्माण की दृष्टि को आगे बढ़ाना जारी रखे हुए है। पश्चिमी क्षेत्र में, कंपनी पश्चिमी राज्यों में 4884 से अधिक चैनल भागीदारों के साथ मजबूत पकड़ रखती है। सतत आजीविका, कौशल विकास और पर्यावरण संरक्षण पर केंद्रित इसकी व्यापक सामुदायिक सहभागिता की पहलों ने भारत के निर्माण परिदृश्य में एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में इसकी प्रतिष्ठा को और मजबूत किया है।

म्यूचुअल फंड में दूसरी बार सर्वाधिक निवेश

नई दिल्ली.

घरेलू शेयर बाजारों में गिरावट के बावजूद म्यूचुअल फंड योजनाओं में निवेशकों का भरोसा बना हुआ है। यही वजह है कि म्यूचुअल फंड की इक्विटी योजनाओं में निवेश दिसंबर, 2024 में मासिक आधार पर 14.50 फीसदी बढ़कर 41,156 करोड़ रुपये पहुंच गया। यह इन योजनाओं में दूसरी बार रिकॉर्ड निवेश है।

खास बात है कि जोखिम की चिंताओं के बावजूद स्मॉल और मिडकैप इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेशकों की दिलचस्पी बनी रही। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एम्फी) के आंकड़ों के मुताबिक, स्मॉल और मिडकैप फंड में निवेश दिसंबर, 2024 में बढ़कर क्रमशः 4,668 करोड़ एवं 5,093 करोड़ रुपये की रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गया। दोनों योजनाओं में निवेश मासिक आधार पर क्रमशः 4.3 फीसदी और 13.5 फीसदी बढ़ा है। हालांकि, लार्जकैप फंड में निवेश 21 फीसदी कम होकर 2,011 करोड़ रह गया।

सेंसेक्स और निफ्टी में पिछले माह करीब दो फीसदी की गिरावट आई थी, जबकि मिडकैप में 1.4 फीसदी व स्मॉलकैप में 0.6 फीसदी तेजी रही थी। आंकड़ों के मुताबिक, सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) में दिसंबर, 2024 में 26,459 करोड़ रुपये का निवेश हुआ। यह आंकड़ा नवंबर के 25,320 करोड़ की तुलना में 4.49 फीसदी अधिक है। पिछले 18 महीने में 17वीं बार एसआईपी में रिकॉर्ड निवेश हुआ है। एसआईपी के प्रबंधन के तहत परिसंपत्तियां (एयूएम) बढ़कर 13.63 लाख करोड़ रुपये पहुंच गईं, जो म्यूचुअल फंड के कुल एयूएम का करीब पांचवां हिस्सा है।

शेयर बाजार में कोहराम

7 दिन में विदेशी निवेशकों ने निकाल लिए 1.71 लाख करोड़

नई दिल्ली.

घरेलू शेयर बाजार में बिकवाली हावी है, इस हफ्ते बाजार की चाल सुस्त रही है. मार्केट कभी चढ़ रहा है, तो कुछ ही देर में धड़ाम हो जा रहा है. आज भी मार्केट मार्केट लाल निशान में खुले और कुछ देर बाद मार्केट फिर से हरा हुआ. लेकिन खबर लिखने तक सेंसेक्स 0.30 फीसदी की गिरावट के साथ कारोबार कर रहा है. इस हफ्ते की शुरुआत में ही एचएमपीवी वायरस के केस आने से भारतीय बाजार में हलचल देखने को मिली थी. कंपनियों के नतीजों को देखते हुए और अगले महीने आने वाले बजट से पहले विदेशी निवेशकों ने एक बार फिर से काफी संख्या में अपने शेयर बेच दिए हैं. विदेशी निवेशकों ने साल 2025 के पहले 7 कारोबारी दिनों में 1.71 लाख करोड़ रुपये मार्केट से निकाल लिए, जिसका सीधा असर मार्केट पर दिख रहा है. वह कौन से 3 कारण हैं, जिनकी वजह से विदेशी निवेशकों का भरोसा भारतीय बाजार से उठ रहा है. भारतीय शेयर मार्केट में पिछली 2 तिमाहियों से आय में गिरावट देखने को मिल रही है.

इस वजह से विदेशी निवेशक बाजार में ठहर नहीं रहे हैं. हालांकि, ब्रोकरेज की रिपोर्ट्स की माने तो इस फाइनेंशियल ईयर 25 में आय में बढ़ोतरी सिंगल अंकों में हो सकती है. भारत की जीडीपी का वित्त वर्ष 25 में अनुमान पिछली जीडीपी से कम जताया गया है.जीडीपी वृद्धि वित्त वर्ष 24 के 8.2 फीसदी से धीमी होकर 6.4 फीसदी सालाना रहने का अनुमान है, जो वित्त मंत्रालय के 6.5 फीसदी के पूर्वानुमान और आरबीआई के 6.6 फीसदी के अनुमान से कम है. ये कारण भी विदेशी निवेशकों को प्रभावित कर रहे हैं. बेंचमार्क 10-वर्षीय यूएस ट्रेजरी यील्ड 4.73 फीसदी के स्तर पर पहुंच गई है. ऐसे में जानकारों का मानना है कि फेड जनवरी में दरों में कटौती को बनाए रखेगा, जिसले डॉलर को मजबूती मिलेगी और जब डॉलर मजबूत होगा.

एफएमसीजी सेक्टर को को बढ़ावा देने सरकार से अपील

नई दिल्ली. दैनिक उपभोक्ता सामान बनाने वाली एफएमसजी कंपनियों को 2024 में खपत में मंदी का सामना करना पड़ा। इसकी बड़ी वजह मुद्रास्फीति और बढ़ी हुई ब्याज दरें और कच्चे माल की बढ़ती कीमतों की वजह से लागत में बढ़ोतरी हुई है। कंपनियों का कहना है हम 2025 को लेकर सर्तक हैं और उम्मीद भी कर रहे हैं कि आगामी बजट में देश की अर्थव्यवस्था में गति को बनाए रखने के लिए सरकार से ग्रामीण क्षेत्रों के लिए प्रोत्साहित योजनाओं को बढ़ाने की मांग कर रहा है।

उद्योग ने मांग की है कि सरकार उपभोग को बढ़ावा देने के लिए वेतनभोगी वर्ग को आयकर में राहत प्रदान करे और उद्योग से जुड़ी हुई नीतियों को बढ़ा देने की मांग की है। जॉय पर्सनल केयर के (ग्लोबल) के संस्थापक और अध्यक्ष सुनील अग्रवाल कहते हैं, जब हम 2025 की ओर देखते हैं, तो हम सतर्कतापूर्वक आशावादी हैं जिसका समर्थन आर्थिक दृष्टिकोण में सुधार और बाजार विकास पर हमारे फोकस से मिलता है। आगामी बजट में देश की अर्थव्यवस्था में खपत को प्रोत्साहित करने के लिए ऐसे उपायों पर विचार किया जाना चाहिए, जो खपत को लगातार बढ़ाए और आर्थिक विकास के चक्र को गति प्रदान करते रहें। गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड के सीएफओ आसफि मालबारी कहते, शहरी बाजार स्थिर बने हुए हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में मांग में उत्साहजनक सुधार हुआ है, हालांकि यह सुधार छोटे आधार से हुआ है।

चावल की पैदावार में 10 फीसदी तक की कमी

नई दिल्ली. भारत में क्लाइमेट चेंज का असर सिर्फ इंसान या जीव-जंतुओं पर ही नहीं बल्कि फसलों पर भी पर रहा है. जलवायु परिवर्तन की वजह से भारत के चावल और गेहूं उत्पादन में 6-10 प्रतिशत की गिरावट आने का अनुमान है, जिससे लाखों लोग प्रभावित हो सकते हैं. जिन लोगों को अभी सस्ते में चावल, गेंहू मिल रहे हैं उन्हें आने वाले समय में नहीं मिलेंगे. इसके अलावा समंदर का पानी गर्म हो रहा है, जिससे मछलियां समंदर में ठंड पानी की ओर जा रही है. इससे मछुआरों की रोजीरोटी पर भी संकट बढ़ेगा. भारत का गेहूं उत्पादन 2023-24 फसल वर्ष में 11.329 करोड़ टन तक पहुंच गया था, जो वैश्विक उत्पादन का लगभग 14 प्रतिशत था. जबकि चावल की फसल 13.7 करोड़ टन से अधिक थी. चावल और गेहूं देश की कुल आबादी के लिए मुख्य आहार हैं, जिनमें से 80 प्रतिशत लोग विभिन्न सरकारी योजनाओं के माध्यम से सब्सिडी वाले खाद्यान्न पर निर्भर हैं. ऐसे में अगर फसलों की पैदावर में कमी आएगी तो आम लोगों के लिए नई मुसीबत खड़ी हो सकती है. भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्र ने कहा, जलवायु परिवर्तन से गेहूं और चावल की पैदावार में 6 से 10 प्रतिशत की कमी आएगी, जिसका देश के किसानों और खाद्य सुरक्षा पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा.

हृदय जागरुकता शिविर का आयोजन कल

डॉ. सचिन देव्हारे
संचालक
प्रिवेंटिव कार्डियोलॉजिस्ट और मुग्धा ईईसीपी हार्ट केयर सेंटर

नागपुर. हृदय रोग की घटनाओं तक में वृद्धि चिंताजनक है. हृदय रोग के से हर साल लाखों लोगों की मौत हो जाती है, ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी है. इसलिए हृदय स्वास्थ्य की देखभाल के लिए हृदय जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया है. यह एमडी मुग्धा ईईसीपी और हार्ट केयर सेंटर, उत्कर्ष उमंग अपार्टमेंट, अजनी चौराहा माउंट कार्मेल स्कूल के पीछे वर्धा रोड नागपुर स्थित आयोजित किया गया है. स्वास्थ्य शिविर कल यानी 12 जनवरी रविवार को 9:00 बजे से सायं 6:00 बजे तक रहेगा. इस कैंप में परामर्श निःशुल्क कार्टोग्राफी चेकअप (7500/- के स्थान पर मात्र 4500/) डॉक्टर का परामर्श निःशुल्क मिलेगा. एक कार्टोग्राफी परीक्षा हृदय और रक्त वाहिकाओं के रक्त प्रवाह का आयामी चित्रण प्रदान करती है. हृदय रोग का शीघ्र पता लगाने और निवारक उपायों को लागू करने के लिए यह तकनीक बहुत उपयोगी है.

भविष्य में निवेश

यदि आप अपने हृदय स्वास्थ्य के बारे में चिंतित है या हृदय रोग के खतरे में हैं तो कार्टोग्राफी निवारक स्वास्थ्य रणनीति में एक मूल्यवान उपकरण हो सकती है मानचित्रण निरीक्षण कब करें: यदि आपके परिवार में हृदय रोग का इतिहास है. हृदय रोग के जोखिम कारक जैसे उच्च रक्तचाप, मधुमेह वा मोटापा यदि आपको हृदय रोग के लक्षण हैं जैसे सीने में दर्द, सांस लेने में तकलीफ या थकान है तो आज ही संपर्क करें, अन्य जानकारी के लिए संपर्क करे, 8282620969.

सुई, ट्यूब या एक्स-रे के उपयोग के बिना हृदय का आकलन करता है, सभी उम्र पेसमेकर वाले रोगियों के लिए सुरक्षितः हृदय में रक्त प्रवाह, ऑक्सीजन की आपूर्ति और संभावित समस्याओं का आकलन करता है. लागत प्रभावी अन्य आक्रामक नैदानिक प्रक्रियाओं की तुलना में अधिक लागत प्रभावी विकल्प सुरक्षित और दोहराने योग्य काटोग्राफी उपचार की प्रभावशीलता निगरानी समय के साथ हृदय स्वास्थ्य में परिवर्तन की निगरानी के लिए उपयोगी है। यह परीक्षण अन्य नैदानिक परीक्षणों का पूरक है, जिससे हृदय स्वास्थ्य के लिए एक व्यक्तिगत दृष्टिकोण बनाने की अनुमति मिलती है.

नोटः हृदय रोग का इलाज यहां रोजाना सुबह 9 बजे से 8 बजे तक ईईसीपी एंड एसीटी द्वारा किया हे.
हेल्थ लाइननम्बर 82820969, 8181810969, 9975947528, 7385449219 साथ में पुरानी रिपोर्ट भी जरूर लाए.

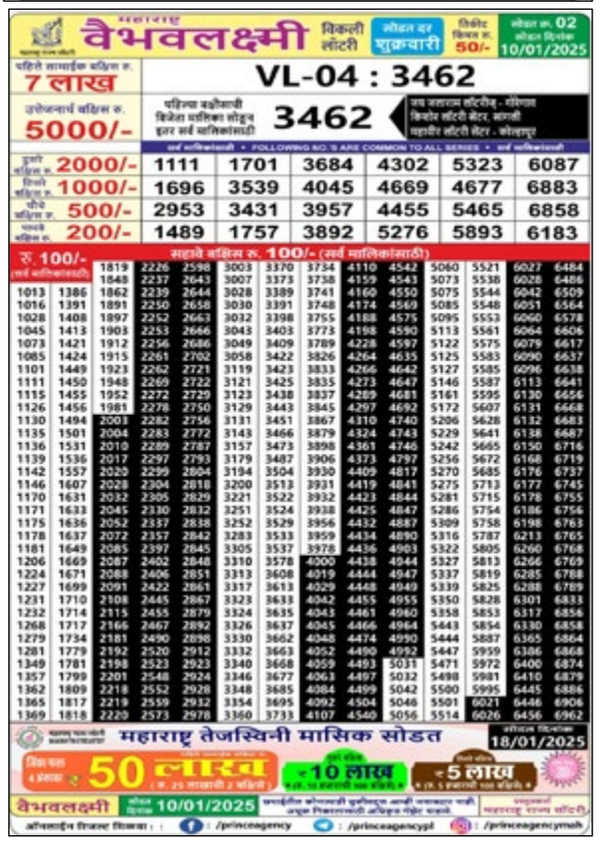

भारत 6.6 फीसदी की दर से करेगा विकास

नई दिल्ली.

भारत के विकास की रफ्तार थोड़ी सुस्त जरूर है, लेकिन यह पस्त नहीं है. देश आगे भी कम से कम 6.6 फीसदी की दर से विकास करता रहेगा. संयुक्त राष्ट्रसंघ की ताजा रिपोर्ट तो यही कहती है. हाल ही में जारी विश्व आर्थिक स्थिति और संभावनाएं रिपोर्ट का सार यही है कि भारत के विकास की दिशा में आगे बढ़ने में ज्यादा बाधा नहीं है. लेकिन यह मुख्य रूप से निजी खपत और निवेश पर आधारित होगा.

इस तरह रिपोर्ट में यह साफ कर दिया गया है कि आम आदमी कितना ज्यादा खर्च करता है, इसी पर देश की तरक्की की रफ्तार निर्भर करेगी. यानी आप बाजार में अपनी जेब जितनी अधिक ढीली करेंगे और घर के खर्च में जितनी ज्यादा मुट्ठी खोलेंगे, उतना ही देश विकास करेगा.

इसके साथ ही विकास के लिए निवेश की शर्त भी जोड़ दी गई है. यानी निजी खपत के अलावा देश में निवेश होना भी जरूरी है. जाहिर है कि निवेश के मोर्चे पर मजबूती घरेलू और विदेशी दोनों स्तर पर चाहिए. रिपोर्ट में साफ इशारा किया गया है कि घरेलू कारणों से चीन आर्थिक मोर्चे पर कमजोर हो रहा है.

चीन में घरेलू खपत में कमी आ गई है. रियल एस्टेट मंदी का शिकार है और युद्ध के कारण बाकी प्रॉडक्ट की मांग में कमी से भी चीन जूझ रहा है. इसका फायदा उठाने के लिए भारत को सर्विस सेक्टर में निर्यात बढ़ाने की जरूरत है. मैनुफैक्चरिंग सेक्टर में भी अधिक से अधिक निर्यात को बढ़ावा देना चाहिए.

१- श्रद्धा सबुरी लॉटरी, साई मंदिर
२- जय भोले लॉटरी, झेरी लॉन
३- न्यू बॉम्बे लॉटरी, लक्ष्मी भवन चौक धरमपेठ
४-साई लॉटरी, पंचशील चौक
५- अनिल बंसोड़ लॉटरी, झासीरानी चौक बर्डी
६- नरेंद्र लॉटरी, शिवम् मॉल के पास सीताबर्डी
७- प्रवीण लॉटरी महाराष्ट्र बैंक मुंजे चौक सीताबर्डी
८-मयूरी लॉटरी, आकाशवाणी चौक
९-माँ आंबे लॉटरी, आगाराम देवी
१०- नितिन लॉटरी, रामबाग कॉलोनी, मेडिकल चौक
११-दिलीप लॉटरी, नर्सिंग टॉकीज़, महाल
१२ श्री गणेश लॉटरी नर्सिंग टॉकीज़, महाल
१३-शुभम लॉटरी नर्सिंग टॉकीज़, महाल
१४ श्री गजानन लॉटरी झेंडा चौक, महाल
१५-आशीष लॉटरी शाहिद चौक, इतवारी
१६- ख्वाजा लॉटरी कमाल टॉकीज़, कमाल चौक
१७- वैभव लॉटरी इंदौरा चौक लष्करी बाग
१८-चिकटे लॉटरी सक्करदरा चौक
१९- ओमसाई लॉटरी,महाकाळकर बिल्डिंग, छोटा ताजबाग
२०- गुरुदेव लॉटरी , गांधीचौक चंद्रपुर
२१-गजानन लॉटरी, अकोला
22- प्रेम लॉटरी सेंटर, कमाल चौक
23- नारायण लॉटरी, शहीद चौक, इतवारी
24- महावीर लॉटरी, बाजार चौक, कलमेश्वर

प्रविण कडू : 9822472123

CMYK

अपराध पर लगाम नहीं लगाई गई...: पुलिस पर भड़के अजित पवार

पुणे.

पुणे में कॉल सेंटर की महिला कर्मचारी की दर्दनाक हत्या का मामला तूल पकड़ रहा है। इसी बीच राज्य के उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने पुलिस को चेतावनी दी है कि अगर अपराध पर लगाम नहीं लगाई गई, तो उनकी जगह दूसरे अधिकारी लाए जा सकते हैं। साथ ही उन्होंने बढ़ते अपराध का जिम्मेदार भी पुलिस को करार दिया है। 28 वर्षीय शुभदा कोडारे की दिन दहाड़े एक युवक ने धारदार हथियार से हत्या कर दी थी।

गुरुवार को पवार ने कहा कि अगर पुलिस पुणे में अपराध पर लगाम लगाने में असमर्थ है, तो 'कहीं न कहीं उसकी कमी' है जबकि उसे बुनियादी ढांचे संबंधी सभी सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं।

महाराष्ट्र का दूसरा सबसे बड़ा शहर अकसर 'कोयता' गिरोहों के लिए चर्चा में रहता है, जो दरांती जैसे लंबे ब्लेड वाले हथियारों से लोगों को निशाना बनाते हैं। ऐसे कई हमलों की घटनाएं सीसीटीवी में रिकॉर्ड हुई हैं, जिससे आम नागरिकों में डर और परेशानी बढ़ गई है।

इन गिरोहों के बारे में पूछे जाने पर उपमुख्यमंत्री पवार ने कहा, 'मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस (जिनके अधीन गृह विभाग है) ने इन मामलों का गंभीरता से संज्ञान लिया है। इस क्षेत्र (पवार जिले के बारामती

से विधायक हैं) का प्रतिनिधि होने के नाते, मैंने भी इस मुद्दे को बहुत गंभीरता से लिया है।' अजित पवार ने दावा किया कि सभी जानते हैं कि पुलिस के काम में कोई राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं है।

राकांपा प्रमुख ने कहा, 'बुनियादी ढांचे, आवास, नए कार्यालय और मानव संसाधन के मामले में विभिन्न सुविधाएं दिए जाने के बावजूद अगर पुलिस इन अपराधों पर लगाम लगाने में असमर्थ है, तो इससे पता चलता है कि पुलिस बल में वरिष्ठ अधिकारियों के स्तर पर कहीं न कहीं कोई कमी है। अगर वे स्थिति से निपटने में सक्षम नहीं हैं, तो उन्हें यह स्वीकार करना चाहिए और हम अपराध को नियंत्रित करने के लिए बेहतर अधिकारी तैनात करेंगे।'

शुभदा हत्याकांड

पुणे में BPO यानी बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग कंपनी में काम करने वाली 28 वर्षीय महिला की मंगलवार शाम को उसके पुरुष सहकर्मी ने कथित तौर पर धारदार हथियार से हमला कर हत्या कर दी थी। घटना येरवडा इलाके में स्थित कंपनी डब्ल्यूएनएस के पार्किंग स्थल में हुआ। पीड़िता की पहचान शुभदा कोडारे के रूप में हुई है, जबकि आरोपी का नाम कृष्णा कनोजा है, जो कंपनी के लेखा अनुभाग में काम करता था। अतिरिक्त पुलिस आयुक्त मनोज पाटिल ने कहा, 'प्राथमिक जानकारी के अनुसार, संदिग्ध ने शाम करीब छह बजे कंपनी के पार्किंग स्थल में कोडारे की दाहिनी कोहनी पर धारदार हथियार से हमला किया। यह जानकारी मिली है कि ये हमला धन उधार लेने के विवाद का नतीजा था।' उन्होंने बताया कि महिला का काफी खून बह रहा था और उसे नजदीकी अस्पताल ले जाया गया, लेकिन इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

बेटे ने घर में लगा ली फांसी

नांदेड. महाराष्ट्र के नांदेड़ में मोबाइल नहीं मिलने पर एक युवक ने आत्महत्या कर ली. बेटे के आत्महत्या की जानकारी होते ही पिता ने भी फांसी लगाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली. घटना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनों के शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है. एक ही परिवार में हुई दोहरी मौत से इलाके में मातम पसरा गया है. इसी के साथ गांव में मोबाइल फोन के अत्याधिक इस्तेमाल पर चर्चा शुरू हो गई है.

तकनीकी युग ने लोगों के जीवन को जितना आसान बनाया, उतना ही परेशानियां भी बढ़ाई है. एक तरफ मोबाइल और तकनीक का इस्तेमाल कर हम अपने काम को आसान बना रहे है. वहीं, दुसरी तरफ यहीं हमारी बुरी आदतें बनती जा रही है. ऐसा ही एक मामला नांदेड़ के बिलोली इलाके से सामने आया है. यहां एक युवक ने मोबाइल इस्तेमाल कर रहा था, लेकिन इसी दौरान पिता ने उसका मोबाइल छीन लिया.

मोबाइल फोन के लिए युवक ने की आत्महत्या

यह दुर्भाग्यपूर्ण घटना नांदेड़ के बिलोली तालुका के एक गांव की है. यहां मोबाइल फोन के लिए एक 17 साल एक युवक ने सुसाइड कर लिया. युवक ने अपने कमरे में फांसी लगाकर अपनी अनमोल जिंदगी समाप्त कर ली. बेटे की मौत की खबर सुनकर उसके पिता ने भी खेत में जाकर फांसी लगा ली और अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली.आत्महत्या करने वाले पिता-पुत्र की पहचान ओंकार पैलवार और राजू पैलवार के रूप में हुई है.

परिवार में पसरा मातम

घटना की जानकारी होते ही पीड़ित परिवार में हड़कंप मच गया. एक ही परिवार में दोहरी मौत से परिवार सदमे में हैं. परिवार का कहना है कि उन्हें बिल्कुल भी अंदेशा नहीं था कि मोबाइल फोन परिवार के दो लोगों की मौत का कारण बन जाएगा. इस घटना ने समाज को भी सोचने पर मजबूर कर दिया है कि आखिर कैसे मोबाइल फोन हमारी जान से भी ज्यादा कीमती हो गया है.

गैंगस्टर का जेल से बाहर आने पर साथियों ने निकाला जुलूस

पुणे. महाराष्ट्र के पुणे से एक चौकाने में वाला मामला सामने आया है. दरअसल, येरवडा जेल से छूटने पर आरोपी के 50 साथियों ने गैंगस्टर का स्वागत जुलूस निकालकर किया, लेकिन इसकी पूर्व इजाजत पुलिस ने नहीं ली. जुलूस निकालने के बाद गैंगस्टर के खौफ से इलाके में हड़कंप मच गया. इसके बाद पुणे पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया.

खास बात यह है कि येरवडा पुलिस ने आरोपियों का भी जुलूस निकाला. येरवडा पुलिस ने इस घटना को गंभीरता से लेते हुए आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई में जुटी है.

गैंगस्टर के साथियों ने जमकर उड़ाया कानून का मजाक

येरवडा पुलिस के मुताबिक मकोका के केस में जेल में बंद आरोपी ने रिहा होते ही अपने साथियों के साथ रिहाई की खुशी में 4 पहिया और दोपहिया वाहन पर विशाल रैली निकाली. इतना ही नहीं, गैंगस्टर के लोगों ने इस दौरान कानून की जमकर खिल्ली भी उड़ाई.

इन आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज

येरवडा पुलिस ने प्रफुल्ल उर्फ गुड्या कस्बे, दीपक मदाने, करण सोनवणे, अनिकेत कस्बे, अंश पुंडे, अजय कस्बे, सागर कस्बे, अभिजीत धवले, राहुल रसाल, नान्या कांबले, रोशन पाटिल, तुषार पेठे सहित 35 से 40 अन्य के खिलाफ मामला दर्ज किया है. येरवडा पुलिस ने आरोपी और उसके खास साथियों को फिर उसी तरह से रैली निकालते हुए गिरफ्तार किया, जिस तरह से उन्होंने रिहाई की रैली निकालकर हुड़दंग मचाया था. बता दें कि पुणे पुलिस ने आरोपियों को उसी तरह से रैली निकालते हुए गिरफ्तार किया, जिस तरह गैंगस्टर का जेल से छूटने पर उसके साथियों ने स्वागत में जुलूस निकाल हुड़दंग मचाया था. येरवडा थाना पुलिस सभी के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता के तहत मामला दर्ज कर कार्रवाई में जुटी है.

महिला की बेटी को फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजी ; हाई कोर्ट पहुंचा मामला

मुंबई. मुंबई में एक पुलिसकर्मी का घिनौनी हरकत का मामला सामने आया है। यहां एक महिला पुलिस के पास चोरी की शिकायत लेकर गई थी। लेकिन पुलिस के अधिकारी ने मामला की जांच नहीं की, उल्टे महिला की बेटी को फेसबुक पर फ्रेंड रिक्वेस्ट भेज डाली। अब मुंबई हाई कोर्ट की एक बेंच ने सोमवार को मामले पर संज्ञान लिया। बॉम्बे हाई कोर्ट ने मामले का संज्ञान लेते हुए जोन डीसीपी को एक्शन लेने का निर्देश दिया है।

चोरी की शिकायत लेकर पहुंची थी महिला

दरअसल, अगस्त साल 2024 में मुंबई के कांदिवली में रहने वाली एक महिला ने समता नगर पुलिस स्टेशन में चोरी की शिकायत दर्ज कराई। हालांकि

पुलिस द्वारा इस मामले में कोई एक्शन नहीं लिया गया, जिसके बाद उसने एक बार फिर मामले पर शिकायत दर्ज कराई। महिला का आरोप था कि दर्ज कराए गए शिकायत के संदर्भ में पुलिस द्वारा कोई एक्शन नहीं लिया गया, उल्टे एक पुलिस के PSI ने महिला की बेटी को फेसबुक पर फ्रेंड रिक्वेस्ट भेज दिया। कार्रवाई न होने से निराश होकर महिला ने हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया और आरोप लगाया कि चोरी के मामले की जांच कर रहे पीएसआई ने उचित जांच करने के बजाय उनकी बेटी को फेसबुक पर फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजी।

बॉम्बे हाई कोर्ट ने की टिप्पणी

इसके बाद बॉम्बे हाई कोर्ट की एक बेंच ने मामला का संज्ञान लिया। इस मामले में टिप्पणी करते हुए बीते सोमवार को जस्टिस रेवती मोहिते डेरे और जस्टिस नीला के गोखले की खंडपीठ ने कहा, "हम इस बात को समझने में बिल्कुल असमर्थ है कि किसी महिला का केस जो पुलिस अधिकारी देख रहा हो वह उसे या उससे जुड़े हुए किसी को भी फ्रेंड रिक्वेस्ट कैसे भेज सकता है? इसके बाद कोर्ट ने जोन डीसीपी को निर्देश दिया है कि इस मामले पर सही तरीके से जांच कर कार्रवाई की जानी चाहिए।

धोखाधड़ी और ब्लैकमेलिंग का मामला आया सामने

पुणे. महाराष्ट्र के पुणे से एक महिला बैंकर के साथ धोखाधड़ी और ब्लैकमेलिंग का मामला सामने आया है. आरोपी के खिलाफ ओशिवारा पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया गया है. आरोपी पर कथित तौर पर कुल 38 लाख रुपये की धोखाधड़ी का आरोप है. अब पुलिस मामले की जांच कर रही है.

पीड़िताने बताया कि इमामुद्दीन शेख नाम के युवक ने शादी का वादा किया था, लेकिन उसे धोखा दिया गया और उसके बिना सहमति के संबंध बनाए. साथ ही साथ 38 लाख रुपये भी ठग लिए. इस मामले की जांच अब पुणे की मुंधवा पुलिस द्वारा की जाएगी. **पुलिस की फर्जी आईडी का इस्तेमाल**

इमामुद्दीन शेख के खिलाफ यह मामला पुणे में पिछले साल नवंबर में दर्ज हुआ था, जब पुलिस को पता चला कि शेख ने महिला के फ्लैट पर पुलिस की फर्जी आईडी का इस्तेमाल किया था. पुलिस ने जांच के दौरान पाया कि शेख का पता हैदराबाद के हुमायूं नगर में था. इसके अलावा, विरार में भी एक महिला डॉक्टर को धोखा देने का मामला सामने आया था, जिसमें उसने महिला से शादी का झांसा देकर धोखा दिया था. शेख के खिलाफ एक और प्राथमिकी विरार में दर्ज की गई थी.

आरोपी इमामुद्दीन शेख ने विरार में एक डॉक्टर को धोखा दिया था और उसे बदनाम करने के लिए उसकी अंतरंग तस्वीरें उसके रिश्तेदारों को भेज दी थीं. इसके बाद, महिला बैंकर ने भी महसूस किया कि उसके साथ भी ठगी की गई है और उसने मुंधवा पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई. महिला बैंकर ने आरोप लगाया कि शेख ने उसे गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी दी थी.

नौकरी के झूठे सबूत भी दिखाए थे

इमामुद्दीन शेख ने एक वैवाहिक वेबसाइट पर अपना प्रोफाइल पोस्ट किया था और महिला बैंकर से भ्रष्टाचार रोधी खुफिया समिति के एजेंट के रूप में संपर्क किया था. उसने महिला को नौकरी के झूठे सबूत भी दिखाए थे. कुछ दिनों बाद, शेख ने महिला बैंकर के फ्लैट में उसके सहमति के बिना उसके साथ यौन संबंध बनाए.

इसके अलावा, उसने महिला से 55,000 रुपये वसूले और यह कहकर पैसे लिए कि वह लोनावाला में एक बंगला परियोजना में निवेश करना चाहता है. महिला ने यह पैसा अपने भाई की शादी के लिए अलग रखा था. आरोपी इमामुद्दीन शेख वर्तमान में हैदराबाद में जेल में बंद है.

शख्स को दिनदहाड़े उठा ले गए बदमाश

छत्रपती संभाजी नगर. महाराष्ट्र के संभाजी नगर में एक हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां दिनदहाड़े एक शख्स की किडनैपिंग का मामला सामने आया है। बताया जा रहा है कि पुरानी रंजिश को लेकर शख्स को किडनैप किया गया है। मिली जानकारी के मुताबिक आरोपी पैसा वापस लेने के लिए गए थे, लेकिन पैसा नहीं मिला और उन्होंने शख्स को किडनैप कर लिया। वहीं घटना का सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है, जिसमें दिनदहाड़े शख्स को किडनैप करने की घटना को देखा जा सकता है। वहीं पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

जांच कर रही पुलिस

मिली जानकारी के मुताबिक महाराष्ट्र के संभाजी नगर में कुछ लोग एक व्यक्ति से पैसा वापस लेने के लिए गए थे। हालांकि जब उन्हें पैसे नहीं मिला तो आरोपियों ने एक शख्स को किडनैप करने की कोशिश की। बताया जा रहा है कि आरोपियों ने लगभग 8 लाख रुपये की मांग थी। आरोपियों ने शख्स को किडनैप किया और फिर उसे एक लोकेशन पर ले गए, लेकिन पीड़ित का फोन घटनास्थल पर ही गिर गया था। इसके बाद पुलिस ने जांच की और आरोपियों के बारे में भी पता लगाया। फिलहाल पुलिस ने इस मामले में कुछ आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है।

महाराष्ट्र में मिली हार को नहीं पचा पा रही कांग्रेस

मुंबई. महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में मिली हार को कांग्रेस पचा नहीं पा रही है। कांग्रेस के नेता अभी भी हार के सदमे से बाहर नहीं निकल पाए हैं। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता विजय वडेट्टीवार ने इसे लेकर अब बयान दिया है। उन्होंने कहा कि विधानसभा चुनाव में मिली हार का प्रमुख कारण है, सीट शेयरिंग में दो हफ्ते से समय तक चर्चा करना, जिस कारण प्रचार के लिए बहुत कम समय मिला। अगर समय पर सीट शेयरिंग हो जाता तो कांग्रेस को चुनाव प्रचार करने का समय मिलता जो नहीं मिला। उन्होंने कहा कि चुनाव प्रचार की कोई प्लानिंग नहीं हो पाई, क्योंकि समय नहीं मिला। विजय वडेट्टीवार ने कहा कि कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष नाना पटोले और संजय राउत ने सीट शेयरिंग में दो सप्ताह लगा दिए।

इंडी गठबंधन में विवाद, महाराष्ट्र में हार नहीं पचा पा रही कांग्रेस

उन्होंने कहा कि विधानसभा चुनाव में हुई हार के अनेक कारण हैं। उनमें से एक कारण यह भी है कि सीट शेयरिंग में हमने 20 दिन लगा दिए। उस समय नाना पटोले, संजय राउत प्रमुख जैसे प्रमुख नेता उस समय थे। सीट शेयरिंग पर दो दिन में फैसला हो जाता तो प्लानिंग के लिए वक्त मिल जाता। हमने कोई प्लानिंग नहीं कि क्योंकि हमें समय ही नहीं मिला। तीनं पक्ष का संयुक्त कार्यक्रम नहीं आया। चुनाव में मिली हार के अनेक कारण है। मुझे लगता है यह मुख्य कारण है कि सीट शेयरिंग प्रक्रिया में देरी हुई। महाराष्ट्र में महाविकास अघाड़ी यदि सीटों के बंटवारे पर दो दिन में फैसला कर लेती तो फायदा होता। 20 दिन बंटवारे में चले गए। ऐसा किसी षडयंत्र या प्लानिंग के तहत किया गया यह शंका उत्पन्न हो रही है।

संजय राउत ने कही ये बात

वहीं शिवसेना यूबीटी के नेता संजय राउत ने बयान देते हुए कहा कि लोकसभा चुनाव के बाद अबतक इंडिया गठबंधन की बैठक नहीं हुई है। इंडिया गठबंधन के लिए यह ठीक नहीं है। तेजस्वी यादव, ममता बनर्जी, अखिलेश यादव और उमर अब्दुल्ला सभी का यह कहना है कि इंडिया गठबंधन का वजूद नहीं रहा है। लोगों के मन में इस प्रकार की भावना आती है तो इसके लिए गठबंधन की सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस जिम्मेदार है। उन्होंने कहा कि संवाद नहीं है, डायलॉग नहीं है, चर्चा नहीं है। इंडिया गठबंधन में सबकुछ ठीक नहीं है, इसको लेकर लोगों के मन में संशय है। अगर कांग्रेस पार्टी की यह भूमिका है कि लोकसभा चुनाव के लिए गठबंधन बना था, अब इसकी जरूरत नहीं है तो ऐलान कर दें इसका। उन्होंने कहा कि मैं अपको एक बात बता देता हूं कि अगर यह गठबंधन टूट गया तो फिर दोबारा गठबंधन नहीं होगा।

परफ्यूम की बोतलों से जोरदार धमाका; 4 लोग घायल

पालघर. महाराष्ट्र के पालघर जिले के एक फ्लैट में उस वक्त जोरदार धमाका हुआ जब कुछ लोग परफ्यूम की बोतलों पर एक्सपायरी डेट बदलने की कोशिश कर रहे थे। इस धमाके में चार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। धमाका इतना तेज था कि पास के क्षेत्रों में भी इसकी आवाज सुनाई दी। घायलों को तुरंत नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनकी हालत स्थिर बताई जा रही है। पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर मामले की जांच शुरू कर दी है। प्रारंभिक जांच से यह संकेत मिल रहे हैं कि धमाका बॉटल्स के अंदर किसी प्रकार के केमिकल रिएक्शन के कारण हुआ होगा, जो एक्सपायरी डेट बदलने के दौरान उत्पन्न हुआ। पुलिस ने मौके से कई आपत्तिजनक सामग्री और उपकरण बरामद किए हैं।

आज का राशिफल

मेष- मेष राशि के जातकों के लिए कल दिन लंबे समय से रुके हुए कामों को पूरा करने के लिए रहेगा. आपका कोई पुराना मित्र लंबे समय बाद आपसे मिलने आ सकता है.

वृषभ- राशि के जातकों के लिए दिन महत्वपूर्ण रहने वाला है. कार्य क्षेत्र में आपको कोई बड़ी उपलब्धि मिल सकती है.

मिथुन- राशि के जातकों के लिए दिन किसी नए काम को करने के लिए अच्छा रहेगा. आप अपने पिताजी से कामों को लेकर सलाह ले सकते हैं.

कर्क- राशि के जातकों के लिए दिन सोच समझ कर कामों को करने के लिए रहेगा. आपको किसी अजनबी पर भरोसा करने से बचना होगा.

सिंह- राशि के जातकों के लिए दिन कठिनाइयों भरा रहने वाला है. कार्य क्षेत्र में आपके बॉस यदि आपको कोई काम सौंपे. आपका पूरा साथ देंगे.

तुला- राशि के जातकों के लिए दिन सेहत के मामले में उतार चढ़ाव भरा रहने वाला है.

वृश्चिक- राशि के जातकों के लिए दिन खुशियों से सराबोर रहने वाला है. आप यदि नौकरी में बदलाव करने की योजना बना रहे थे, तो वह आप कर सकते हैं.

धनु- राशि के जातकों के लिए दिन मिश्रित रूप से फलदायी रहने वाला है .आप किसी धार्मिक आयोजन में सम्मिलित हो सकते हैं.

मकर- राशि के जातकों को अपने पारिवारिक मामलों को मिल बैठकर सुलझाने की आवश्यकता है. आपको वाहनों का प्रयोग सावधान रहकर करना होगा.

कुंभ- राशि के जातकों के लिए दिन मध्यम रूप से फलदायक रहने वाला है. आपको अपने कामों में स्वच्छता से आगे बढ़ने की आवश्यकता है.

मीन- राशि के जातकों के लिए दिन सामान्य रहने वाला है. आपके घर किसी अतिथि का आगमन होने से परिवार के सभी सदस्य व्यस्त रहेंगे.

कार्रवाई के डर से वाल्मीक कराड की नींद उड़ गई?

> तनाव के कारण आंखें लाल होने का...

बीड :

बीड के सरपंच संतोष देशमुख हत्याकांड से जुड़े रंगदारी मामले में गिरफ्तार वाल्मीक कराड सीआईडी की हिरासत में सो रहे हैं. लगातार जागने और तनाव के कारण उनकी आंखें लाल हो गई हैं और डॉक्टरों ने सेल में ही उनका इलाज शुरू कर दिया है. दावा है कि संभावित कार्रवाई के डर से वाल्मीक कराड की नींद उड़ गई.

बीड के मसजोग गांव के सरपंच संतोष देशमुख की 9 दिसंबर को बेरहमी से हत्या कर दी गई थी. पुलिस ने इस मामले में 7 लोगों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज किया था. इनमें से अब तक 6 को गिरफ्तार किया जा चुका है. कृष्णा आंधले नाम का एक आरोपी अभी भी फरार है. इसकी गहनता से जांच की जा रही है. इसी मामले से जुड़े रंगदारी के एक मामले में सीआईडी ने वाल्मीक कराड को गिरफ्तार किया है. वाल्मीक कराड मंत्री धनंजय मुंडे के विश्वासपात्र हैं. इसलिए इस मामले की गंभीरता बढ़ गई है.

पवनचक्की कंपनी से रंगदारी मांगने का आरोप

इस संबंध में आई एक रिपोर्ट के मुताबिक, पवन मिल कंपनी से 2 करोड़ रुपये की रंगदारी मांगने के मामले में सीआईडी सेल में बंद वाल्मीक कराड की हालत अब खराब हो गई है. वह इस वक्त काफी तनाव में हैं। उसे अच्छी नींद नहीं आती. इससे उसकी आंखें लाल हो गईं. बुधवार शाम करीब सात बजे डॉक्टरों ने उनकी जांच की। इसके बाद रात करीब 9 बजे नेत्र रोग विशेषज्ञ को बुलाकर वाल्मीक की आंखों की जांच की और दवा दी।

लगातार जागते रहने और तनाव के कारण आंखें लाल हो जाती हैं

डॉक्टरों के मुताबिक, इंसानों में अत्यधिक जागरुकता और तनाव के कारण आंखें लाल हो सकती हैं. वाल्मी कराड पर विष्णु चाटे के मोबाइल फोन से पवन मिल कंपनी के अधिकारियों से रंगदारी मांगने का आरोप है. यह भी जानकारी है कि इस संबंध में कॉल रिकॉर्डिंग सीआईडी के हाथ लग गयी है. इससे वाल्मीक कराड का पैर और गहरा गया है और अब कार्रवाई के डर से उनकी नींद उड़ गई है.

जिस कार में वाल्मीक ने सरेंडर किया था, उसे जब्त कर लिया गया

वाल्मिक कराड ने 31 दिसंबर को पुणे में सीआईडी कार्यालय में आत्मसमर्पण कर दिया था। वह सफेद कार से आया था. उनके साथ परली के 2 लोग भी थे। पुलिस ने इस कार को जब्त कर लिया है. अब कहा जा रहा है कि कार मालिक शिवलिंग मोराले समेत वाल्मीक की मदद करने वाले अन्य लोगों के खिलाफ भी कार्रवाई की जाएगी.

छात्रों को बनाया मजदूर और भरवा दिए गड्ढे

छत्रपती संभाजी नगर. महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजी नगर(औरंगाबाद) में खराब सड़कों से परेशान शिक्षकों ने स्कूली छात्रों से गड्ढे भरवाए. गड्ढे भरवाने का एक वीडियो इन दिनों सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिस पर बच्चों के अभिभावकों ने अपनी आपत्ति दर्ज कराई है. इसके अलावा अन्य लोगों ने भी वायरल वीडियो पर अपनी प्रतिक्रिया जाहिर की है. ज्यादातर लोगों ने टीचर्स के खिलाफ अपना गुस्सा जाहिर किया है. औरंगाबाद के गंगापुर तालुका के धोरेगांव से भोलेगांव तक सड़क पर बड़ी संख्या में गड्ढे हैं. इन गड्ढों के कारण बाइक से आने जाने वाले शिक्षकों को परेशानी हो रही थी.

बाबा सिद्धीकी मर्डर केस में लॉरेंस बिश्नोई शामिल?

मुंबई : एनसीपी नेता जीशान सिद्धीकी ने गुरुवार को मुंबई पुलिस के जॉइंट कमिश्नर गौतम लखमी से मुलाकात की और अपने पिता बाबा सिद्धीकी की हत्या के मामले में दाखिल की गई चार्जशीट की स्थिति के बारे में जानकारी ली। जीशान सिद्धीकी ने बताया कि पुलिस ने उन्हें चार्जशीट देने से इनकार कर दिया है, जिसके बाद उन्होंने अदालत में अपील की है। उन्होंने कहा, "पुलिस ने हमें चार्जशीट देने से मना कर दिया। इसलिए हम अदालत में अपील कर रहे हैं।

NOTICE INVITING QUOTATIONS

Quotations are invited from reputed supplier / firms for supply of following Improved tool-kits (50 sets) for Handicraft artisans of Cane & Bamboo craft.

नं.	विवरण	मात्रा
१	गॉजिंग चिजल (बडी + छोटी)	२
२	स्कू चिजल (बडी + छोटी)	२
३	पार्टिंग चिजल	१
४	स्क्वेयर चिजल (बडी + छोटी)	२
५	हैकसॉ लकडी के काम के लिए	१
६	हथौडी	१
७	मापन फिता	१
८	धातु की स्केल	२
९	हैकसॉ ब्लैड पैनी करने के लिए छोटी फाइल	१
१०	ट्राइस्क्वॉयर	१
११	मापन गेज प्लेट	१
१२	बांस फाडने का चाकू	१
१३	कॉम्बिनेशन स्टोन	१
१४	पौवर आपरेटेड हैंड ड्रिल छोटी	१
१५	पौवर आपरेटेड हैंड ड्रिल छोटी	१

The interested parties / firms / suppliers are requested to quote their rates including GST as applicable in sealed envelope. The quotation should reach this office i.e. Secretary, Shangufta Parveen, Shilipar Bahuuddeshiya Kalyankari Mahila Sanstha, Roshan Manzil, Diwan Plot, Beside of Auliya Masjid, Behind SBI Dighori Branch, Tajabag, Umred Road, Nagpur 440024, Contact No. 7720073776 on or before 11/01/2025 to 31/01/2025, 6.00 p.m. by post or Courier. The Tender will be opened in presence of Committee on 03/02/2025, 11.00 a.m. at Handicrafts Service Centre, CGO Complex, Block-C, Seminary Hills, Nagpur 440006. Quotations received after the last date will not be considered.

Secretary
Shilpikar Bahuuddeshiya Kalyankari Mahila Sanstha, Nagpur

कार्यालय नगर परिषद सावनेर जिल्हा नागपुर

क्रमांक-नपसा/स्वा.वि./जाहि.सू.130/२०२५ दिनांक :- १०/०१//२०२५

'नायलॉन मांजा' अंतर्गत बंदी बाबत जाहीर आवाहन

सावनेर नगर परिषद सावनेर जि. नागपूर येथील नगर परिषद हद्दीतील सर्व दुकाने/संस्था/आस्थापना/ मार्केट/ संघटना/कार्यालय व व्यक्तींना सूचित करण्यात येत आहे, राष्ट्रीय हरित लवाद (NGT National Green Tribunal) यांचे आदेश क्र. ३८४/२०१६ व ४४२/२०१६ दि.१४/१२/२०१६ नुसार पर्यावरण संरक्षण अधिनियम १९८६ च्या कलम ५ अन्वये पक्षी व मनुष्यास इजा करणाऱ्या नायलॉन मांजाच्या वाहतूक, विक्री, साठवणूक व वापरास प्रतिबंध घालण्याचे निर्देश दिले असून नायलॉन मांजा विक्री, साठवणूक व वापरणे याबाबत दोषी आढळल्यास दंडात्मक तथा फौजेदारी कारवाईची तरतूद असून सावनेर नगर परिषद हद्दीत कोणीही नायलॉन मांजाच्या वाहतूक, विक्री, साठवणूक व वापरास प्रतिबंध घालण्यात आलेल्या आदेशांचे उल्लंघन केल्यास दोषींवर दंडात्मक तसेच कायदेशीर कार्यवाही करण्यात येईल. तसेच नायलॉन मांजाच्या वाहतूक, विक्रीत, साठवून व वापरावर सावनेर नगर परिषद, जि. नागपूर स्तरावर खालीलप्रमाणे कृती दलाची स्थापना करण्यात आलेली आहे.

तक्रार निवारणकरीता प्राधिकृत अधिकारी/कर्मचारी	प्रतिबंध नायलॉन मांजाच्या संबंधित तक्रारीकरीता संपर्क क्र.
श्री.धीरज देशमुख (स्वच्छता निरीक्षक)	९८३४०२९१०८

स्वा./-
(किरण बगडे)
मुख्याधिकारी नगर परिषद सावनेर

जाहीर सुचना

आम जनतेस सुचित करण्यात येत आहे कि मी **शितुल शांताराम कुंभारे** रा.प्लाट नं.279 पंचवटी नगर, नागपुर ने **अशोक केशवराव मारोतकर** रा. माताखेडी,मु.पो. खापा, ता.सावनेर, जि. नागपुर यांच्या मालकीची खालील वर्णनीत शेती मालमत्ता खरेदी करण्याचा टोकन करार केलेला आहे. **स्थावर मालमत्तेचे वर्णन:- मौजा मोहगाव(जं.), प.ह.नं.48, ता. सावनेर, जि. नागपुर, भुमापन क्र.151, आराजी- 0.92 हे.आर. जमा रू.2.90 हक्क-पुर्ण, हिस्सा-पुर्ण चर्तु:सिमा:- पूर्वेस- पांधन रस्ता, पश्चिमेस- सुरेश लक्ष्मण डोहळे यांचे शेत, उत्तरेस- पांधन रस्ता व दक्षिनेस- गावात जानारा रोड आहे.** तरी या मालमत्ते बाबत कोणाचाही कोणताही प्रकारचा हक्क, गहाणपत्र, कर्ज, बोझा. अधिकार, बक्षिस, विक्रीपत्र करारनामा मुखत्यारपत्र, वारसा हक्क किंवा इतर अन्य हक्क असेल तर त्यांनी ही सुचना प्रकाशित झालेल्या तारखेपासुन **सात दिवसाच्या आत** खालील दिलेल्या पत्त्यावर आपला आक्षेप हरकत, दावा, तक्रार सादर करावा. मुदतीनंतर आलेल्या कोणत्याही प्रकारचा हक्क, आक्षेप पुरावा ग्राह्य धरल्या जाणार नाही सौद्या संबंधी पुढील कार्यवाही करण्यात येईल, यांची नोंद घ्यावी.

नागपूर
दि.11/01/2025

श्री. शितुल शांताराम कुंभारे
रा.प्लाट नं.279, पंचवटी
नगर,नागपुर.
मो.8857907335

सुविचार

सच्चे रिश्ते कुछ नही मांगते सिवाय साथ और समय के...

संपादकीय

धार्मिक आयोजनों में भीड़ नियंत्रण की लापरवाही

❐ किसी भी हादसे का सबसे बड़ा सबक यह होना चाहिए कि ऐसे उपाय किए जाएं, ताकि दोबारा उसी तरह के हालात पैदा न हों। मगर धार्मिक स्थलों पर या ऐसे आयोजनों में जमा होने वाली भीड़ और उसके प्रबंधन को लेकर अक्सर इस हद तक लापरवाही बरती जाती है कि बार-बार भगदड़ की वजह से लोगों की जान जाने की घटनाएं सामने आ रही हैं। गौरतलब है कि तिरुपति के भगवान वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर परिसर में बुधवार को मची भगदड़ ने पुराने जख्मों को कुरेद दिया है।

यह आमतौर पर देखा गया है कि किसी खास आयोजन की तैयारी तो कर ली जाती है, लेकिन भीड़ नियंत्रण और प्रबंधन के उपाय पहले से नहीं किए जाते। तिरुपति में भी ऐसा ही हुआ। वहां टोकन लेने के लिए श्रद्धालु उमड़ पड़े और देखते ही देखते अफरा-तफरी मच गई। उसके बाद मची भगदड़ में छह लोगों की जान जाने की खबर आई। तीर्थयात्रियों की सुरक्षा के लिए कारगर तैयारी की गई होती, तो इस हादसे से बचा जा सकता था। सवाल है कि इस हद तक बरती गई लापरवाही की वजह से जो हुआ, उसके लिए किसे जिम्मेदार ठहराया जाएगा! यह विचित्र है कि धार्मिक स्थलों पर होने वाले आयोजनों में भगदड़ मचने की स्थिति में उसमें फंसे श्रद्धालुओं को शीघ्रता से बाहर निकालने के लिए वैकल्पिक मार्ग का प्रबंध नहीं किया जाता। जबकि विशिष्ट अतिथियों को किसी भी प्रतिकूल स्थिति से बचाने के लिए उनके आने और जाने का अलग इंतजाम होता है। पिछले कुछ समय से इस तरह के आयोजनों में भीड़ के बेकाबू हो जाने की घटनाएं आए दिन सामने आ रही हैं।

कई राज्यों में हुए ऐसे कई हादसों में अब तक सैकड़ों लोगों की मौत हो चुकी है। मगर ऐसी घटनाओं को रोकने को लेकर न तो कभी गंभीरता से विचार होता है, न कभी कोई ऐसी कार्रवाई होती है, जो आगे के आयोजनों के लिए सबक सिद्ध हो। ज्यादातर जांच रपटों में इसकी वजह भीड़ बताई जाती है, जबकि कुप्रबंधन का तथ्य आमतौर पर छिपा लिया जाता है। शायद ही कभी ऐसी भगदड़ और उसमें लोगों की मौत के लिए आयोजकों की जवाबदेही तय की जाती है और प्रशासनिक लापरवाही को जिम्मेदार ठहराया जाता है। नतीजतन, ऐसे हादसे लगातार सामने आ रहे हैं।

पड़ोसी देशों में अल्पसंख्यकों के साथ दुर्व्यवहार का भारतीय मुसलमानों और इस्लाम पर प्रभाव

प्रो बंदिनी कुमारी
लेखिका समाज शास्त्र की प्रोफेसर हैं और उत्तर प्रदेश के डिग्री कॉलेज में कार्यकर्ता हैं

भारत के पड़ोसी देशों में अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा की घटनाएं गंभीर चिंता का विषय हैं। इन घटनाओं का प्रभाव न केवल संबंधित समुदायों पर पड़ता है, बल्कि क्षेत्रीय स्थिरता और अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर भी असर डालता है। सभी देशों की सरकारों को चाहिए कि वे अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करें और सांप्रदायिक सौहार्द को बढ़ावा दें। भारत के पड़ोसी देशों (पाकिस्तान, बांग्लादेश, और अफगानिस्तान) में अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा की घटनाएं आम हैं।पाकिस्तान में हिंदू, सिख, ईसाई और अहमदिया समुदाय अल्पसंख्यक हैं।यहाँ पर हिंसा मुख्य रूप से धार्मिक भेदभाव, ईशनिंदा कानूनों का दुरुपयोग, जबरन धर्म परिवर्तन (विशेषकर हिंदू और ईसाई लड़कियों का) एवं मंदिरों और चर्चों पर हमले के रूप में अभिव्यक्त होती है। कुछ प्रमुख उदाहरण में 2020 में कराची में मंदिर को नुकसान पहुंचाने की घटना, ईशनिंदा के आरोप में हत्याएँ (मशाल खान का मामला) इत्यादि ।इसी प्रकार बांग्लादेश में हिंदू, बौद्ध और ईसाई समुदाय अल्पसंख्यक हैं। यहाँ भी अल्पसंख्यकों के ऊपर धार्मिक हिंसा की अभिव्यक्ति दुर्गा पूजा पंडालों पर हमले, साम्प्रदायिक दंगे (जैसे 2021 के कोमिला दंगे), भूमि पर कब्ज़ा और अल्पसंख्यकों को पलायन के लिए मजबूर करना इत्यादि रूप में दिखायी देती है। अफगानिस्तान में सिख और हिंदू समुदाय अल्पसंख्यक हैं। तालिबान और अन्य कट्टरपंथी समूहों द्वारा धार्मिक अत्याचार की हिंसक अभिव्यक्ति 2020 में काबुल गुरुद्वारा पर आतंकवादी हमला में देखी गयी।

मुस्लिम बहुल देशों में अल्पसंख्यकों का हाशिए पर होना विशेष रूप से समस्याग्रस्त है क्योंकि यह इस्लाम की समावेशी प्रकृति के खिलाफ है, जो मुस्लिम समुदाय के भीतर विभिन्न संप्रदायों के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को प्रोत्साहित करता है। यह भेदभाव सांप्रदायिकता की कहानी को बढ़ावा देता है, जिसमें समाज को अस्थिर करने की क्षमता है और यह न्याय और समानता के कुरान के सिद्धांतों का खंडन करता है। मुस्लिम बहुल देशों में अल्पसंख्यकों पर अत्याचार न केवल प्रभावित समुदायों को नुकसान पहुंचाता है, बल्कि इस्लाम की विकृत तस्वीर भी पेश करता है। इस्लाम, अपने सार में, शांति, सहिष्णुता और धार्मिक अल्पसंख्यकों की सुरक्षा की वकालत करता है। कुरान स्पष्ट रूप से "किताब के लोगों" (यहूदियों और ईसाइयों) के लिए सम्मान का आह्वान करता है और दूसरों के प्रति न्याय और दयालुता के महत्व पर जोर देता है, चाहे उनका धर्म कुछ भी हो। पैगंबर मुहम्मद ने कहा है, "जो कोई भी गैर-मुस्लिमों में से किसी को मारता है, वह स्वर्ग की खुशबू नहीं सूंघेगा।" हालाँकि, सत्ता में बैठे लोगों की हरकतें, जो अक्सर राजनीतिक उद्देश्यों के लिए धर्म का उपयोग करते हैं, ने इन शिक्षाओं को पीछे छोड़ दिया है। जब अल्पसंख्यक समूहों को उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है, तो यह धारणा बनती है कि इस्लाम असहिष्णु है और विविधता के साथ असंगत है।

यह नकारात्मक छवि वैश्विक स्तर पर कायम हो रही है जिसका असर पश्चिम और दुनिया के अन्य हिस्सों में मुसलमानों के बारे में लोगों की धारणा पर पड़ता है। इस्लाम को अक्सर उग्रवाद, असहिष्णुता और सांप्रदायिक हिंसा के साथ जोड़ दिया जाता है, भले ही ये क्रियाएँ धर्म के मूल मूल्यों के सीधे विरोधाभास में हों। भारत, अपनी बड़ी मुस्लिम आबादी के साथ, खुद को एक जटिल स्थिति में पाता है। भारतीय मुसलमान, जो मुख्य रूप से हिंदू देश में एक महत्वपूर्ण अल्पसंख्यक हैं, को अक्सर पड़ोसी देशों में मुसलमानों के कार्यों और व्यवहार से आंका जाता है। सांप्रदायिक तनाव में वृद्धि और भारत में धार्मिक समुदायों के बढ़ते ध्रुवीकरण ने एक ऐसा माहौल बनाया है जहाँ भारतीय मुसलमान लगातार जांच के दायरे में हैं।

मीडिया में इस्लाम का नकारात्मक चित्रण, जो अक्सर चरमपंथी समूहों की कार्रवाइयों और बांग्लादेश और पाकिस्तान जैसे देशों में अल्पसंख्यकों के साथ व्यवहार से प्रेरित होता है, इस रूढ़िवादिता को मजबूत करता है कि भारतीय मुसलमान किसी तरह मुख्य रूप से हिंदू समाज में जगह से बाहर हैं। इससे मुस्लिम विरोधी बयानबाजी में वृद्धि हुई है और संदेह और अविश्वास का माहौल बना है। कई मायनों में, मुस्लिम बहुल देशों में मुसलमानों की हरकतें- चाहे वह बांग्लादेश में हिंदुओं का उत्पीड़न हो या पाकिस्तान में हिंदुओं और शियाओं के खिलाफ सांप्रदायिक हिंसा इस कथन में योगदान करती हैं कि इस्लाम असहिष्णुता का धर्म है। यह भारतीय मुसलमानों को एक मुश्किल स्थिति में डालता है, जहाँ उन्हें बहुलवाद, शांति और सह-अस्तित्व के मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की लगातार पुष्टि करनी चाहिए। भारतीय मुसलमानों को मुस्लिम दुनिया के अन्य हिस्सों में होने वाली चरमपंथी कार्रवाइयों से खुद को तटस्थ रखने के साथ साथ वक्त वक्त पर इस तरह के कार्यवाहियों की पुरजोर मज्जम्मत भी करनी चाहिए और ऐसा इसलिए नहीं कि वे अपने साथी मुसलमानों से कटे हुए हैं, बल्कि इसलिए कि उनका मानना है कि इस्लाम की सच्ची भावना सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता और सम्मान में निहित है।

भारत का धर्मनिरपेक्ष संविधान मुसलमानों और अन्य अल्पसंख्यकों को शांतिपूर्वक सह-अस्तित्व के लिए एक मंच प्रदान करता है, लेकिन यह सह-अस्तित्व अक्सर अन्य देशों में व्यक्तियों या समूहों की कार्रवाइयों से खतरे में पड़ जाता है। बांग्लादेश और पाकिस्तान जैसे मुस्लिम बहुल देशों में अल्पसंख्यकों के साथ व्यवहार न केवल इस्लाम के सिद्धांतों के खिलाफ है, बल्कि वैश्विक स्तर पर मुसलमानों की धारणा पर भी इसका दूरगामी प्रभाव पड़ता है। भेदभाव, सांप्रदायिक हिंसा और धार्मिक असहिष्णुता इस्लाम की छवि को धूमिल करती है, जिससे भारत और दुनिया के अन्य हिस्सों में मुसलमानों के लिए इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं की वकालत करना मुश्किल हो जाता है। मुस्लिम बहुल देशों के लिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि उनके कार्य न्याय, सहिष्णुता और सभी लोगों के प्रति करुणा के कुरान के सिद्धांतों के अनुरूप हों, चाहे उनका धर्म कुछ भी हो। इन आंतरिक मुद्दों को संबोधित करके ही मुस्लिम दुनिया अपनी छवि को सुधारना शुरू कर सकती है और विभिन्न समुदायों के बीच विश्वास का पुनर्निर्माण कर सकती है। भारतीय मुसलमानों के लिए, इस्लाम के बहुलवादी मूल्यों को अपनाना और बढ़ावा देना आवश्यक है, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनके धर्म को विभाजन के स्रोत के रूप में नहीं बल्कि तेजी से ध्रुवीकृत दुनिया में शांति और एकता के लिए एक शक्ति के रूप में देखा जाए।

पापा पर कविता

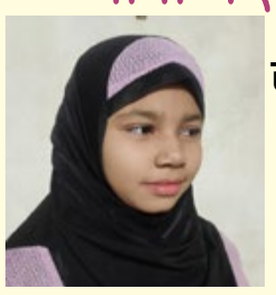

सुमय्या परवीन अंसारी
कक्षा 7 (ब),
अंजुमन हाई स्कूल एंड जूनियर कालेज,
सदर, नागपूर

मेरे पापा प्यारे पापा, सारे जग से न्यारे पापा,
पूरी करते मेरी हर इच्छा उनके जैसा न कोई अच्छा,
कभी-कभी वो गुस्सा करते फिर झट से मुस्कुरा जाते,
पापा अपना हर फ़र्ज़ निभाते हर मुश्किल से मुझे बचाते,
मेरी सब खुशियों का ध्यान वो रखते, मेरी सब इच्छाएँ पुरी वो करते,
बिन बोले ही सब समझ जाते, मुझे जीवन का हर सबक सिखाते,
मेरे पापा प्यारे पापा, सारे जग से न्यारे पापा,
पूरी करते मेरी हर इच्छा उनके जैसा न कोई अच्छा.

आस्था

तिल का एक विशेष महत्व

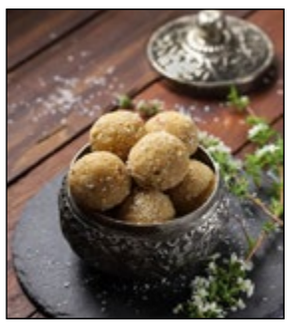

❐ मकर संक्रांति हिंदुओं का विशेष और प्रमुख त्योहार होता है. भगवान सूर्य जब मकर राशि में प्रवेश करते हैं, तो ये त्योहार मनाया जाता है. मकर संक्रांति के दिन स्नान और दान करने की परंपरा का पालन सदियों से किया जा रहा है. हिंदू धर्म शास्त्रों में कहा गया है कि इस दिन पवित्र नदियों में स्नान और दान से पुण्य फल मिलते हैं. इस दिन भगवान सूर्य का पूजन भी किया जाता है. इस साल भगवान सूर्य 14 जनवरी को सुबह 9 बजकर 3 मिनट पर मकर राशि में प्रवेश करने वाले हैं. इसी दिन मकर संक्रांति है. मकर संक्रांति पर तिल के लड्डू बनाने और खाने की परंपरा भी है. इस दिन तिल के लड्डू भगवान सूर्य को भेंट स्वरूप दिए जाते हैं. दरअसल, मकर संक्रांति पर तिल का विशेष महत्व है. तिल दो रंग के होते हैं. एक सफेद और दूसरा काला. इस दिन काले तिल का महत्व अधिक होता है.

इस दिन काले तिल से कई उपाय किए जाते हैं. हिंदू मान्यताओं के अनुसार, इस दिन काले तिल के उपायों से भगवान सूर्य और शनि देव का आशीर्वाद प्राप्त होता है. रोगों और दोषों से मुक्ति प्राप्त होती है. ऐसे में आइए जानते हैं इस दिन काले तिल के क्या उपाय करने चाहिए.

तिल के उपाय, मकर संक्रांति के दिन काले तिल के लड्डू बनाए जाते हैं. मान्यता है कि इस दिन तिल के लड्डू खाने से घर में सुख-समृद्धि का वास बना रहता है. साथ ही सेहत भी अच्छी रहती है. इस दिन भगवान सूर्य को स्नान के बाद जल में काला तिल मिलाकर अर्घ्य देना चाहिए. ऐसा करने से सूर्य देव की विशेष कृपा प्राप्त होती है. करियर आगे बढ़ता है. इस दिन खिचड़ी का दान उसमें काला तिल मिलाकर ही किया जाना चाहिए. ऐसा करने से सूर्य देव और शनि देव दोनों की कृपा बरसती है. घर में धन-धान्य की बढ़ोतरी होती है. इस दिन काले तिल से आहुति देने, तिल मिला खाना खाने से और पानी में तिल को डालने से खास लाभ मिलता है.मान्यता है कि इस दिन पानी में काला तिल डालकर स्नान करने से सभी रोगों और दोषों से छुटकारा मिल जाता है.

प्रेरणादायी

मन और शरीर स्थिर हो तो आनंद का अनुभव होता है

❐ हम जीवन को जितना समझते हैं, जीवन उससे कहीं अधिक है। मनुष्य रूप में हमें जो जन्म मिला है, वह अपनी आत्मा को जानने और उसका मिलाप परमात्मा से कराने के लिए है। जब यह पता होगा कि हमें हमारी आत्मा को परमात्मा में लीन कराना है, तभी हम आंतरिक आध्यात्मिक यात्रा शुरू करेंगे। इसी यात्रा में हम अपने अंतर में परमात्मा का अनुभव कर सकते हैं। इसके लिए हमें अपने ध्यान को बाहरी दुनिया से हटाकर अंतर में केंद्रित करने की सही तकनीक को सीखने की जरूरत है। इस प्रक्रिया को हम ध्यान-अभ्यास कहते हैं। जब हम अपना ध्यान बाहर की दुनिया से हटाकर अंतर में केंद्रित करते हैं, तब हमारे लिए आंतरिक आध्यात्मिक दुनिया खुल जाती है। तब हम परमात्मा की ज्योति और प्रेम से जुड़ सकते हैं।

शांत होकर बैठने की प्रक्रिया दिखने में आसान लगती है, लेकिन जब हम ध्यान-अभ्यास के लिए बैठते हैं, तब पाते हैं कि कई रुकावटें हमारे रास्ते में आती हैं। जैसे ही हमें अपने अंतर में कुछ अनुभव होता है, तब हमें यह भ्रम होता है कि हमने अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है। जबकि हम केवल रास्ते के एक मोड़ तक ही पहुंचे होते हैं। हमें लक्ष्य में आने वाले मोड़ को समझने की जरूरत है। हमें मोड़ को मंजिल समझकर रुकना नहीं चाहिए, बल्कि अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना चाहिए। जैसे ही हम परमात्मा की ओर जाने वाले रास्ते पर कदम बढ़ाते हैं, हमारा मन हमें अंतर में कई मुसीबतों और बाधाओं में डाल देता है। मन से उत्पन्न होने वाले विचार और इच्छाएं हमें विचलित कर हमारा ध्यान अपने लक्ष्य से भटका कर दूर कर देते हैं।

ध्यान-अभ्यास के दौरान हममें से बहुत से लोग शरीर या मन को स्थिर नहीं कर पाते। हम एक या दो दिन की कोशिश के बाद शायद हार मान जाते हैं क्योंकि हम लंबे समय तक स्थिर नहीं रह सकते हैं। लेकिन जब हमें इसका अभ्यास हो जाता है तो हम अपने आपको आंतरिक आध्यात्मिक दुनिया के नजारों और आवाजों का आनंद लेते हुए पाते हैं। इसे महसूस करने की जरूरत है। ध्यान-अभ्यास के लिए हमें धैर्य, दृढ़ता और कठिन परिश्रम की जरूरत है। इसमें हमें अपने ध्यान को अपने भीतर केंद्रित कर भटकने नहीं देना चाहिए। समय के साथ-साथ मेहनत करके हम अपने मन और शरीर को स्थिर करने में समक्ष हो जाते हैं, फिर आंतरिक दुनिया हमारे लिए खुल जाती है। फलस्वरूप हम परमात्मा के प्रेम और ज्योति के साथ जुड़ने पर असीम आनंद का अनुभव कर सकते हैं। इस आनंद या इस अनुभव को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता।

आपकी धारणा, वास्तविकता में नहीं मिल रहा लाभ

❐ मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि जब भी हम कोई नया कार्य करते हैं, तो हमारे स्वयं के दिमाग में उसका सम्भावित परिणाम पहले से ही बनने लगता है। इसे समझने के लिए एक छोटा सा उदाहरण लेते हैं, मान लीजिए आप डाइनिंग टेबल पर डिनर कर रहे हैं, आपको खाने में नमक कम लगता है, लेकिन टेबल पर नमक नहीं मिलता है, आपकी पत्नी बताती है कि नमक किचेन में नीचे वाली अलमारी में रखा है, जाकर ले आओ। आप तुरन्त यह कहकर मना कर देते हैं, कि नमक आपको नहीं मिलेगा, आप नहीं जाएँगे।आपकी पत्नी एक बार फिर जोर देकर कहती है, लेकिन आप उठने के मूड में नहीं हैं, जिसके कारण आप बहाना बनाने लगते हैं कि आपको नमक नहीं मिलेगा। तीसरी बार आपकी पत्नी के कहने पर आप मन मारकर उठ तो जाते हैं लेकिन किचेन में अलमारी समेत कई जगह ढूंढ़ने के बावजूद आपको नमक मिलता ही नहीं है, जिसके कारण मजबूर होकर आपकी पत्नी को किचेन में आना पड़ता है और पहली बार में ही अलमारी में नमक मिल जाता है जो सामने ही रखा होता है। तब आपके उपर यह इल्जाम लगता है कि आपको जिस जगह इतना ढूंढ़ने पर भी नमक नहीं मिला, वहीं पर आपकी पत्नी ने एक ही बार में उसे कैसे ढूंढ़ लिया। निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि आप जो सोचते हैं, जिस प्रकार आपके मन की धारणा है, वह आपके कार्य पर खास प्रभाव डालती है। आपके अन्तर्मन की धारणा की वजह से ही आपका दिमाग उस कार्य से जुड़ा एक काल्पनिक वातावरण तैयार करता है, जो आपकी सफलता या असफलता का जिम्मेदार होता है। आपके मन में कार्य की सफलता के प्रति विश्वास होना बहुत जरूरी है। जैसे कि किचेन से नमक लाने के बारे में आपने यह धारणा पहले ही बना ली, कि नमक आपको नहीं मिलेगा, जिसके कारण आपके दिमाग ने इसी धारणा पर कार्य किया और किचेन में आपको नमक नहीं मिला।

व्यंग्य

ये है हमारी देशभक्त डॉट कॉम

अनुज खरे

❐ हाल ही में विदेश से लौटा हूं। स्तब्धनुमा खुमारी में उत्साहित हूं। अभी फिजूल की बातें सुनने का टाइम नहीं है। अच्छा भाई साहब एक बात तो बताइए कि क्या आप भी कभी विदेश गए हैं? नाराज मत होइए, गए होंगे। ऐसा है कि मैं तो पहली ही बार गया था, इसलिए तो ज्यादा ही उत्साहित हूं। इसलिए पूछ डाला। खैर, आप भी इसी तरह से उत्साहित होंगे, जब पहली बार वहां से लौटे होंगे। स्तब्धनुमा खुमारी का तो ऐसा है कि वहां का डिस्प्लिन, जज्बात, देशभक्त आदि-आदि देखकर मेरे पेट में मरोड़ उठने लगे, आंखें तक भर-भर आईं। कसम से क्या गजब की देशभक्त होते हैं। आप ने देखे तो होंगे ही वहां, सच्ची बोलिओ गए थे कि नहीं? वो क्या है कि हम भी आम देशवासियों टाइप किसी के अब्राड आदि जाने की बात पर आसानी से कम ही यकीन करते हैं। नहीं आप बोल रहे हो तो गए तो होगे ही। यार क्या सडकें हैं.क्या बिल्डिंगें हैं. कितनी प्यारी-प्यारी कारें हैं. कितने सुंदर-सुंदर तो लोग हैं.गंदगी का कहीं नामोनिशान नहीं। सड़कों पर कचरा कहीं मिलता तक नहीं। देश को साफ सुथरा रखने के प्रति कितने कांशस रहते हैं विदेशी सोच-सोच के ही मुझे तो चक्कर आने लगते हैं।

कुछ तो इतने सफाई प्रेमी रहते हैं कि गंदगी करने से पहले ही उसे साफ करने की जुगत में चिंतित रहते हैं। यकीन नहीं आ रहा होगा, आएगा भी कैसे कभी गए हो. मान लिया गए होगे। एक बार मैंने एक अंग्रेज को डस्टबिन के पास खड़े देखा, काफी देर तक जब वो वहां से नहीं हिला तो मैंने पूछा कि भाई साहब क्या बात है। उसने जो कहा उसे सुनकर अपना देश होता तो कोई उसे डस्टबिन में ही डालकर केरोसिन छिड़क देता। कह रहा था कि उसका दोस्त अभी कुछ केले लेकर आने वाला है इसी कारण वह यहां खड़ा है ताकि खाकर छिलके डस्टबिन में फेंक सके। क्यों? ताकि सड़क पर कहीं गंदगी न रहे। फुरसतिया कहीं का। आप करेंगे ऐसा? क्या कहा-हां करेंगे. आपकी इतनी मजाल.अपने देश को लजाओगे क्या? आप कम से कम भारतवासी तो नहीं हो सकते। मैं मान ही नहीं सकता। क्या कोई अपने देशवासी भाई को ऐसा 'गंदा' जवाब देता है भला?

अच्छा एक किस्सा सुनो- एक बार एक किसी मोहल्ले में सफाई करता दिखा। मालूमात करने पर पता चला कि वह तो बिचारे किसी कंपनी के सीनियर ऑफिसर हैं। जब कभी टाइम मिलता है तो मोहल्ले की सफाई में जुट जाते हैं। ताकि कचरे का ढेर न लग जाए। अब लो ऐसे-ऐसे सनकी भरे पड़े हैं विदेश में कि पूछो मत। हम क्या इतने फोकट हैं कि ऑफिस जाना छोड़कर ऐसे निकृष्ट से कामों में भिड़े रहें। वहां भले ही काम न हो लेकिन कार्यालयीन समय का ऐसा घोर अपव्यय कदापि नहीं करेंगे। एक सुबह से पूरी स्ट्रीट के लोगों को एक नाली की सफाई में लिप्त पाया। कैसे ठरकी मोहल्ला है, मैंने तत्काल सोच लिया था कि यहां अपने दोस्त के घर रहना ही नहीं है।

ऐसी फालतू की चीजें देख-देखकर आदतें खराब होने का डर था भाई। इसलिए मैं वहां से खिसक लिया था। अरे, हमारी वो बजबजाती नालियों की बात ही कुछ और है, विदेशियों ने देखी ही नहीं हैं वे शानदार नाले-नालियां। क्या तो गंदगी- राष्ट्रीय एकता के जीवंत स्मारक हैं जीवंत स्मारक। सौहार्द से सराबोर। समरसता से ओतप्रोत। विशाल खुली बांहें जो चाहे आसरा ले ले। क्या तो जानवर, क्या तो शराबी,क्या तो सन्यासी। सब का समान भाव से स्वागत। ऐसा उत्साह। इतनी उद्दात भावना। ठेठ गांव से धुर शहरों तक।

संस्मरण

अनुपमा रे

❐ अपने संघर्ष के दौरान मज़दूर वर्ग ने बहुत-से नायक पैदा किये हैं। अल्बर्ट पार्सन्स भी मज़दूरों के एक ऐसे ही नायक हैं। यह कहानी अल्बर्ट पार्सन्स और शिकागो के उन शहीद मज़दूर नेताओं की है, जिन्हें आम मेहनतकश जनता के हक़ों की आवाज़ उठाने और 'आठ घण्टे के काम के दिन' की माँग को लेकर मेहनतकशों की अगुवाई करने के कारण 11 नवम्बर, 1887 को शिकागो में फाँसी दे दी गयी।

मई दिवस के शहीदों की यह कहानी हावर्ड फ़ास्ट के मशहूर उपन्यास 'अमेरिकन' का एक हिस्सा है। इसमें शिलिंग नाम का एक बढ़ई मज़दूर आन्दोलन से सहानुभूति रखने वाले जज पीटर आल्टगेल्ड को अल्बर्ट पार्सन्स की ज़िन्दगी और शिकागो में हुई घटनाओं और मज़दूर नेताओं की क़ुर्बानी के बारे में बता रहा है। शिलिंग लेबर पार्टी से जुड़ा एक ईमानदार मज़दूर कार्यकर्ता है, जो पार्सन्स को तब से जानता है जब वह समाजवादी नहीं बना था।

हालाँकि वह पार्सन्स के विचारों से सहमति नहीं रखता था, लेकिन वह उसकी नेकदिली, ईमानदारी और मेहनतकश लोगों की सच्ची आज़ादी पाने के लक्ष्य के प्रति उसकी सच्ची भावना की पूरे दिल से इज़्ज़त करता था।पार्सन्स जानता था कि ये मुट्ठीभर थैलीशाह अपनी मर्ज़ी से मज़दूरों के ख़ून की एक-एक बूँद निचोड़कर अपने ऐशो-आराम के सामान जुटाना बन्द नहीं करेंगे। वह मज़दूरों को संगठित होने और अपने अधिकारों के लिए लड़ने की राह बताता था। उस वक़्त मज़दूरों से चौदह-चौदह, सोलह-सोलह घण्टे काम लिया जाता था। दुनियाभर में अलग-अलग जगहों पर दिन में आठ घण्टे काम कराये जाने की माँग को लेकर आन्दोलन हो रहे थे।

क्या आप अस्थमा दमा सांस रोग से परेशान हैं

❑ दमा सास या सास की बीमारी खासकर बारिश या ठंडी के मौसम में ज्यादा परेशान करती है कई लोगो को यह बीमारी कई सालो से लम्बे समय से होती है। ये लोग इसके लिए हमेशा आयुर्वेद में हिअ एलोपैथिक स्टेरॉइड, एंटीएलर्जिक मेडिसिन्स खाते रहते है परन्तु उनको केवल टेम्परारी रिलीफ हे मिलता है और तकलीफ नहीं छूटती। परन्तु आयुर्वेद एक ऐसा प्राचीन जीवनशास्त्र (लाइफ साइंस) एवं चिकित्सा शास्त्र (मेडिकल साइंस) है जिससे की सास जड़ से है की बीमारी में तुरंत आराम

डॉ. विनोद तिवारी
बी.ए.एम.एस,
पी.ओ.डी.

मिलता है एवं लम्बे समय तक कम दवाओं में बिना किसी साइड इफेक्ट्स के मरीज़ को आराम मिलता है कुछ इलाज के बाद तो उनको दवाई भी लेने की जरुरत नहीं होती केवल कभी कभी ही तकलीफ होने पर होती है।

सांस (अस्थमा) के रोगियों को चल रही रोगी आज कल चल रही कोरोना पान्डेमिक से भी ज्यादा सावधान रहने की ज़रूरत है क्यूंकि इन रोगियों को कोरोना आसानी से तकलीफ में डाल सकता है। आयुर्वेदिक उपचार में श्वास निवारण सिरप ,चित्रकहरीतकी, वासावलेह , स्पेशल श्वासाहर कैप्सूल ,तुलसी सृंग तुलसी प्लस स्ट्रांग सिरप, खोखो सिरप ,एलीनोज़ कैप्सूल इत्यादि से अस्थमा या सास की बीमारी में जल्दी आराम होते हुए देखा गया है। शिवशंकर आयुर्वेदिक चिकित्सालय सीताबर्डी टेम्पेल बाजार रोड। महाजन मार्किट में स्तिथ योग काम्प्लेक्स में एक ऐसा चिकित्सालय है जहा के अनुभवी डॉक्टर्स इस बीमारी अस्थमा ,श्वासरोग दमा का सटीक एकदम दुष्परिणाम विरहित इलाज करते है। जो रुग्ण पंप इन्हेलर्स का इस्तेमाल करते है उनके पंप लेने का प्रमाण धीरे धीरे काम होकर पूरी तरह से छूट भी जाता है। उनके अस्थमा अटैक्स कम होकर उनकी सेर्वेटी भी कम हो जाती है। अस्थमा से पीड़ित इच्छुक रुग्ण 9112079000 / 8605245080 पर संपर्क स्थापित कर इस तकलीफ से आज भी छुटकारा पा सकते है।

सीताबर्डी स्तिथ शिवशंकर आयुर्वेदिक एजेंसी अथवा क्लिनिक में इन दूरध्वनि क्रमांकों पर संपर्क स्थापित करें. 9112079000 / 8605245080.

नागपुर मेट्रो समाचार : फैजान मिडिया सर्विसेस प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक: फैजान सिराज शेख ने देश पब्लिकेशन, ई-30/2 हिंगणा एमआईडीसी, नागपुर-16 से मुद्रित कर 532, हनुमान नगर नागपुर.440009 से प्रकाशित किया.
संपादक: इमरान मुमताज शेख, मो. 9730005662 (पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार) ngpms2019@gmail.com RNI.NO - MAHHIN/2019/78960 (सभी न्यायालयीन प्रक्रिया नागपुर न्यायालय में होगी.)

CMYK

हिंदी दैनिक
नागपुर मेट्रो समाचार
नागपुर, शनिवार, 11 जनवरी 2025

चंद्रपुर जिले के साथ-साथ महाकाली मंदिर क्षेत्र का विकास किया जाएगा: मुख्यमंत्री फड़णवीस

> भारतीय जनता पार्टी एवं श्री महाकाली माता महोत्सव समिति की ओर से मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़णवीस का भव्य स्वागत

चंद्रपुर, सुनील तायडे

मुख्यमंत्री बनने के बाद मैं पहली बार चंद्रपुर शहर आया हूं और मां महाकाली के दर्शन के साथ इस यात्रा की शुरुआत करना एक शुभ संकेत है। कार्य करते समय शक्ति का आशीर्वाद जरूरी है। मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़णवीस ने कहा कि अगर मां चाहेंगी तो यहां योजना से भी बड़ा काम किया जाएगा ।

राज्य के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़नवीस शुक्रवार को मा. सा. कन्नमवार रजत जयंती महोत्सव कार्यक्रम के अवसर पर चंद्रपुर के दौरे पर थे। इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी एवं श्री महाकाली माता महोत्सव समिति की ओर से महाकाली मंदिर में मुख्यमंत्री का स्वागत कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने माता महाकाली की आरती की. विधायक किशोर जोरग़ेवार, राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष हंसराज अहीर , राजुरा विधानसभा क्षेत्र के विधायक देवराव भोंगले , भारतीय जनता पार्टी के ग्रामीण जिला अध्यक्ष हरीश शर्मा , महानगर अध्यक्ष राहुल पावड़े , नेता खुशाल बोंडे , विजय राऊत , कल्याणी किशोर जोरग़ेवार, संध्याताई गुरनुले , महिला अध्यक्ष सविता कांबले , संजय कंचर्लावर , रघुवीर अहीर , मनोज पाल , सुभाष कासनगोट्टुवार , युवा मोर्चा अध्यक्ष विशाल निंबालकर , डॉ. मंगेश गुलवाडे , महासचिव किरण बुटले , संदीप अवारी , विवेक बोडे , दशरथ ठाकुर , नामदेव दाहुले , अमोल शेंडे , राशिद हुसैन , नकुल वासमवार , विश्वजीत शाह , जितेश कुलमेथे , सलीम शेख , प्रकाश देवताले , सुमित बेल , रामपाल सिंह , दत्त प्रसाद महादानी , महाकाली महोत्सव के सचिव सामी अजय जयसवाल , कोषाध्यक्ष पवनजी सराफ , ट्रस्टी मिलिंद गमपावर , प्रो. श्याम धोपटे , प्रो. शाम हेडाऊ , अशोक मटे , संजय बरघटे , मनीषा पडगिलवार , डॉ. जयश्री कापसे गावंडे , वंदना हटगांवकर , सैली टोंडारे , सविता डंडारे , आशा महाकाले आदि उपस्थित थे। इस मौके पर महाकाली मंदिर क्षेत्र में भव्य स्वागत मंच बनाया गया था.

यहां श्री महाकाली माता महोत्सव समिति और भारतीय जनता पार्टी की ओर से मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़णवीस का स्वागत किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़णवीस ने कहा कि उन्होंने मां महाकाली से आम लोगों के जीवन को खुशहाल बनाने के लिए काम करने का आशीर्वाद मांगा है । महाराष्ट्र और सर्व समाज को एकजुट रहना चाहिए.` समाज में कार्य करते समय व्यक्तित्व आंखों के सामने रहना चाहिए। इस मौके पर उन्होंने यह भी कहा कि हमारी प्यारी बहनों के आशीर्वाद से हमें ऊर्जा मिल रही है. इस अवसर पर बोलते हुए विधायक किशोर जोरगेवार ने कहा कि यहां 500 साल पुराना महाकाली का मंदिर है . इतिहास में उल्लेख है कि छत्रपति शिवाजी महाराज जब कर्नाटक जा रहे थे तो उन्हें माता महाकाली के दर्शन हुए थे।

यहां के क्षेत्र के विकास के लिए 250 करोड़ रुपये का फंड मंजूर किया गया है . इस मौके पर बोलते हुए उन्होंने इस काम को जल्द से जल्द शुरू करने की मांग मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडनवीस से की.

इस अवसर पर विधायक किशोर जोरग़ेवार ने निमंत्रण स्वीकार कर किये गये बदलाव के लिए मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़णवीस को धन्यवाद दिया. इस अवसर पर बोलते हुए, विधायक किशोर जोरग़ेवार ने विश्वास व्यक्त किया कि उनके नेतृत्व में राज्य के साथ चंद्रपुर जिले का व्यापक विकास किया जाएगा। उन्होंने इस दौरान यह भी कहा कि वह चंद्रपुर के बेटे हैं, इसलिए इस जिले में उनसे ज्यादा उम्मीदें हैं. कार्यक्रम में बड़ी संख्या में भारतीय जनता पार्टी एवं श्री महाकाली माता सेवा समिति के सदस्य एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे। इस अवसर पर विधायक किशोर जोरग़ेवार ने शॉल श्रीफल , अम्मा टिफिन और सम्मान चिन्ह भेंट कर मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़णवीस का स्वागत किया ।

नन्हे स्वरांश ने विधायक को चौंका दिया

कोरपना.

स्वरांश बमुश्किल तीन साल का था, लेकिन नारडा के स्वरांश ने अपने सामान्य ज्ञान का परिचय देकर विधायकों को भी आश्चर्यचकित कर दिया और उन्हें छोटे गुरु पर टिप्पणी देने के लिए बाध्य कर दिया।

सचिन काकड़े तालुका के नारदा गांव में रहने वाले एक किसान हैं। अपने बच्चे भविष्य में उत्तरोत्तर प्रगति करें। इसके लिए उन्हें नियमित रूप से सामान्य ज्ञान का पाठ दिया जाता है। उसे सकारात्मक रूप से लेते हुए, वह खुशी-खुशी छोटे लड़के को सबक सिखाता है। यहां तक कि गांव के सरपंच से लेकर विधायक, सांसद, मुख्यमंत्री, प्रधान मंत्री, राष्ट्रपति, विभिन्न देशों और राज्यों की राजधानियों के साथ-साथ गांव के विभिन्न लोगों के बारे में भी वह सटीक जानकारी देते हैं। इसलिए उनके ज्ञान की सराहना की जाती है. इसी बीच उन्हें पता चला कि राजुरा विधायक देवराव भोंगले उनके गांव आ रहे हैं. उसने अपने पिता से अपना उपहार लेने का आग्रह किया।

उनके आग्रह पर उनके पिता उनसे मिलने आये। भ्रमण के दौरान विधायक ने उनकी आवभगत की. इस दौरान उन्होंने उनसे कई सवाल भी पूछे. उन्होंने प्रत्येक प्रश्न का सही उत्तर देकर उन्हें अपने सामान्य ज्ञान से परिचित कराया।

उनके इस कृत्य से विधायक भोंगले अभिभूत हो गये. उन्होंने उन्हें उनके भविष्य के प्रयासों के लिए शुभकामनाएं भी दीं।

उप शिक्षा अधिकारी का आसन (खुर्द) स्कूल का दौरा

कोरपना.

पोषण आहार योजना के तहत कोरपना तालुका से पहली बार आने के बाद, जिला परिषद चंद्रपुर के उप शिक्षा अधिकारी विशाल देशमुख, लेखा अधिकारी दाहुले ने जिला स्तरीय मूल्यांकन के लिए जिला परिषद उच्च प्राथमिक विद्यालय आसन खुर्द का दौरा किया।

भ्रमण के दौरान विद्यालय प्रांगण, परिसर एवं विद्यालय में चल रही विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त की तथा विद्यालय की समग्र कार्यप्रणाली पर संतोष व्यक्त किया तथा विद्यार्थियों को अपने अनुभव से निर्मित प्रांगण के बारे में जानकारी दी। विद्यालय के पोषण में पिछवाड़े के बगीचे के महत्व का उल्लेख किया गया। इस अवसर पर पूर्व अध्यक्ष नंदू रणदिवे, स्कूल प्राचार्य घनश्याम पाचभाई, शिक्षक मारोती सोयम, संजय निखाड़े, तुकाराम धांद्रे व सदस्य उपस्थित थे.

कोडशी बस अब गांधीनगर होकर चलेगी

कोरपना, मनोज गोरे

> ग्रामीणों में ख़ुशी, दो गांवों की समस्या दूर हो गयी

चंद्रपुर से कोडशी तक बस फेरी अब गांधीनगर के रास्ते चलेगी। इसलिए गांधीनगर और तुलशी गांव के ग्रामीणों को इस बस से यात्रा करने में सुविधा होगी. पैनगंगा नदी और यवतमाल जिले की सीमा पर स्थित आखिरी गांव कोडशी बुज़ में कई वर्षों से बस सेवा है। लेकिन यह बस तंबड़ी गांव से गांधीनगर जाने की बजाय सीधे दूसरे रास्ते से कोडशी बुज़ जा रही थी. इसलिए, गांधीनगर और तुलसी के ग्रामीणों को यह बस पकड़ने के लिए कोडशी बुज़ या तांबडी जाना पड़ता था। इससे छात्रों, कर्मचारियों और ग्रामीणों को काफी असुविधा हुई। कई वर्षों से मांग हो रही है कि इस बस फेरी को गांधीनगर के रास्ते शुरू किया जाना चाहिए।

इसे राज्य परिवहन निगम ने स्वीकार कर लिया है और ग्रामीणों को बड़ी राहत दी है। यह बस नियमित रूप से सुबह 8:30 बजे कोडाई से रवाना होती है। साथ ही इस बस से गांधीनगर से यवतमाल जिले के तेजापुर गांव जाने वाले ग्रामीणों के लिए भी सुविधा हो गई है.

आजादी के 77 साल और गांव बनने के 63 साल बाद गांव में बस.

तालुका में कोडशी बुज़ गांव पैनगंगा नदी के तट पर है, इसलिए यहां अक्सर मानसून के दौरान बाढ़ आ जाती है। इसलिए, 1962 में, कोडशी बुज़ और क्षेत्र के कुछ ग्रामीणों ने गांधीनगर गांव का निर्माण किया। उन्होंने 63 वर्ष पूरे कर लिये। इस कार्यकाल में गांवों ने भी काफी प्रगति हासिल की।

लेकिन अभी तक इस गांव में एक भी बस नहीं आ रही थी. अब जब यह बस शुरू हुई तो गांवों में खुशी मनाई गई। उन्होंने बस का स्वागत करने के लिए राज्य परिवहन निगम को भी धन्यवाद दिया। इस बस सेवा को शुरू करने के लिए कोडशी बुज़ के सरपंच उमेश कोल्हे और प्रोफेसर बंडू मालेकर ने प्रबंधक से कई बार अनुरोध किया था और उस पर अमल भी किया था.

नगर निगम की अवैध होर्डिंग लगाने वालों के खिलाफ पुलिस में अपराध दर्ज

चंद्रपुर.

चंद्रपुर नगर निगम के तीनों जोन कार्यालयों की ओर से पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कराई गई है कि शहर में होर्डिंग और स्टिकर लगाने वालों के खिलाफ महाराष्ट्र विद्रूपण अधिनियम 1995 और सार्वजनिक संपत्ति क्षति निवारण अधिनियम 1984 के तहत मामला दर्ज किया जाए। शहर में बिना अनुमति के होर्डिंग लगाना वर्जित है।

जोन क्रमांक 1 वार्ड में किसी अज्ञात व्यक्ति ने मैत्री विद्यालय, केसरी बोरवेल के नाम से अवैध होर्डिंग्स लगा दी, जोन क्रमांक 2 वार्ड में नकुल वासमवार; तथा जोन क्रमांक 3 वार्ड में विक्रम शर्मा (डोगरा ड्राई फ्रूट्स) साथ ही जगह-जगह कार वॉश सेंटर, दीवारों और बिजली के खंभों पर बैनर और स्टिकर लगे हुए थे। निरीक्षण के दौरान सहायक आयुक्त ने पाया कि सभी साइन बोर्ड नगर निगम की पूर्व अनुमति के बिना लगाए गए थे।

संबंधित व्यक्ति से मोबाइल फोन के माध्यम से संपर्क कर होर्डिंग्स व पर्चे हटाने को कहा गया, लेकिन अभी तक होर्डिंग्स व पर्चे नहीं हटाए जाने पर अवैध रूप से विज्ञापन करने वाले सभी लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने की शिकायत की गई है। महाराष्ट्र विद्रुपण अधिनियम, 1995 की धारा 3 और सार्वजनिक संपत्ति क्षति निवारण अधिनियम, 1984 विज्ञापन के इस तरीके से सरकारी धन की भारी हानि होती है और शहर के सौन्दर्यीकरण के काम में भी बाधा आती है।

घाटकोपर में होर्डिंग की घटना के बाद माननीय उच्च न्यायालय ने सुस्वराज फाउंडेशन द्वारा दायर जनहित याचिका संख्या 155/2011 के अनुसार शहर में अनाधिकृत होर्डिंग, बैनर और बिलबोर्ड के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का निर्देश दिया है। इसके अनुसार अभियान चलाया जा रहा है चंद्रपुर नगर निगम आयुक्त विपिन पालीवाल के मार्गदर्शन में स्थानीय पुलिस को बुलाकर उन्हें हटाने की कार्रवाई की गई है। प्रशासन द्वारा पर्याप्त सुरक्षा प्रदान की जा रही है।

इससे पहले नगर निगम प्रशासन ने नगर निगम क्षेत्र के मुद्रकों और राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक की। उन्हें हाईकोर्ट के आदेश से अवगत कराया गया तथा चेतावनी दी गई कि शहर में कोई भी अवैध बैनर, बिलबोर्ड या होर्डिंग न लगाई जाए, अन्यथा कोर्ट के आदेशानुसार कार्रवाई की जाएगी।

चूंकि दीवारों पर लगे पोस्टर, बैनर शहर की छवि बिगाड़ रहे हैं और यातायात में भी बाधा डाल रहे हैं, इसलिए इस संबंध में उच्च न्यायालय और राज्य सरकार द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार कार्रवाई की जा रही है। तदनुसार, इस नीति में बिना अनुमति के पर्चे, बैनर, होर्डिंग और कपड़े के चिन्ह लगाने वालों के खिलाफ आर्थिक दंड सहित कानूनी कार्रवाई का प्रावधान है।

अल्लू अर्जुन की बॉलीवुड में होगी धांसू एंट्री

अल्लू अर्जुन अपनी फिल्म 'पुष्पा 2' के चलते लगातार सुर्खियों में बने हुए हैं. हाल ही में अल्लू अर्जुन भगदड़ में घायल हुए बच्चे से मिलने पहुंचे थे. अल्लू अर्जुन के इस काम ने फैंस का दिल ही जीत लिया था. अल्लू अर्जुन से पहले उनके पिता भी घायल हुए बच्चे के हालचाल लेने पहुंचे थे. इसी बीच अल्लू अर्जुन को लेकर एक बड़ी खबर सामने आ रही है. खबर है कि अल्लू अर्जुन जल्द ही बॉलीवुड में एंट्री करने वाले हैं. बीत रात ही अल्लू अर्जुन को मुंबई में स्पॉट किया गया है. अल्लू अर्जुन अपनी टीम के साथ बॉलीवुड के जानेमाने फिल्ममेकर संजय लीला भंसाली के ऑफिस पहुंचे थे. अब अल्लू अर्जुन की ये तस्वीरें धड़ल्ले से वायरल हो रही हैं. अपनी इस रिपोर्ट में हम आपको अल्लू अर्जुन की तस्वीरें दिखाने वाले हैं.

अल्लू अर्जुन, समजय लीला भंसाली के ऑफिस ब्लैक हुडी पहनकर पहुंचे थे. जैसे ही अल्लू अर्जुन वहां पहुंचे वैसे ही मीडिया ने उनको चारों तरफ से घेर लिया. मीडिया को देखकर अल्लू अर्जुन ने अपना चेहरा छिपा लिया. अल्लू अर्जुन की इस हरकत को देखकर फैंस अंदाजा लगा रहे हैं कि अल्लू अर्जुन अपनी अगली फिल्म के लुक को छिपाने की कोशिश कर रहे हैं.

अल्लू अर्जुन अपनी कार की पिछली सीट पर बैठे नजर आए. लंबे समय बाद अल्लू अर्जुन ने अपनी दाढ़ी कटवा ली है. ऐसे में अल्लू अर्जुन का लुक काफी बदला बदला दिख रहा था. फैंस का कहना है कि वो अल्लू अर्जुन के पुष्पाराज के लुक को बहुत मिस करने वाले हैं. मुंबई पहुंचते ही अल्लू अर्जुन ने संजय लीला भंसाली से मुलाकात की. अल्लू अर्जुन के फैंस कयास लगा रहे हैं कि अल्लू अर्जुन ने अपनी अगली फिल्म के चलते संजय लीला भंसाली से मुलाकात की है. यही वजह है जो एक बार फिर से अल्लू अर्जुन के बॉलीवुड डेब्यू की खबर आने लगी है.

लोग कह रहे हैं कि अल्लू अर्जुन और संजय लीला भंसाली ने अगर फिल्म साथ बनाई तो इनकी जोड़ी बॉक्स ऑफिस को हिलाकर रख देगी. हालांकि इस मुलाकात में अल्लू अर्जुन और संजय लीला भंसाली के बीच क्या बात हुई है इसका किसी को कोई अंदाजा नहीं है.

रश्मिका को जिम में लगी गंभीर चोट

साउथ एक्ट्रेस रश्मिका मंदाना की फिल्म पुष्पा 2 बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचा रही है. ये फिल्म 1800 करोड़ से ज्यादा का कलेक्शन कर चुकी है. अब रश्मिका सलमान खान के साथ बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचाने की तैयारी में जुट गई हैं. वह सलमान खान के साथ फिल्म में सिकंदर में नजर आएंगी. रश्मिका इस फिल्म की शूटिंग अपने शेड्यूल के हिसाब से समय समय पर कर रही हैं, लेकिन हाल ही में वह घायल हो गईं. रश्मिका को जिम में एक्सरसाइज करते हुए चोट लग गईं, जिसके बाद एक्ट्रेस को मोस्ट अवेटेड फिल्म सिकंदर की शूटिंग रोकनी पड़ी हैं.

रश्मिका मंदाना के एक करीबी सूत्र ने कहा, 'रश्मिका को हाल ही में जिम में चोट लगी थी और वह आराम करके ठीक हो रही हैं। हालांकि, इस वजह से उनकी आने वाले प्रोजेक्ट्स की शूटिंग कुछ समय के लिए रुक गई है। अब वह पहले से काफी बेहतर महसूस कर रही हैं और जल्द ही सेट पर वापसी करेंगी.' बता दें कि सलमान खान अपने शेड्यूल के हिसाब से फिल्म सिकंदर की शूटिंग लगातार कर रहे हैं. सेट से अब तक कुछ फोटोज लीक हो चुकी हैं, जिसमें सलमान खान का लुक रिवील हो चुका है और अब फैंस रश्मिका मंदाना की सेट से फोटोज देखना चाहते हैं.

बता दें कि रश्मिका मंदाना जल्द ही सलमान खान के साथ फिल्म सिकंदर की शूटिंग शुरू करने वाली थीं. जानकारी के मुताबिक, सलमान और रश्मिका 10 जनवरी से इस फिल्म के आखिरी शेड्यूल की शूटिंग शुरू करने वाले थे, लेकिन अब ऐसा होना थोड़ा मुश्किल लग रहा है. कहा जा रहा है कि रश्मिका जल्द ही ठीक होकर सलमान संग शूटिंग शुरू करेंगी.

फिल्म सिकंदर साल 2025 में ईद के मौके पर रिलीज होने वाली है, जिसके लिए मेकर्स फिल्म की शूटिंग को मार्च में खत्म करने की प्लानिंग करके बैठे हैं. इस फिल्म का निर्देशन ए आर मुरुगादॉस कर रहे हैं. इस फिल्म में सलमान और रश्मिका के साथ सत्यराज, काजल अग्रवाल और प्रतीक बब्बर नजर आने वाले हैं.

कैलिफ़ोर्निया वाइल्ड फायर में फंसी नोरा

कैलिफोर्निया के लॉस एंजेलिस के जंगलों में लगी भीषण आग ने चारों तरफ हड़कंप मचा दिया है। बॉलीवुड एक्ट्रेस नोरा फतेही इस दौरान वहीं मौजूद थीं। एक्ट्रेस ने इस खतरनाक स्थिति से अपनी जान बचा कर भागी हैं। इसके साथ ही उन्होंने सोशल मीडिया पर एक वीडियो पोस्ट किया है। उन्होंने इस अनुभव को बेहद डरावना बताया है। नोरा फतेही ने अपने वीडियो में बताया कि वो जिस होटल में रुकी थीं, उसे आग की वजह से खाली करवाया जा रहा है। उन्होंने वीडियो में कहा, "मैं एलए में हूं, और जंगलों में भीषण आग लगी हुई है। ऐसा मैंने पहले कभी नहीं देखा। हमें होटल खाली करने का ऑर्डर मिला है, और मैंने अपना सामान पैक कर लिया है। आशा है कि मैं समय पर फ्लाइट पकड़ सकूं।"

नोरा ने बाद में दूसरा वीडियो पोस्ट किया जिसमें उन्होंने बताया कि टाइम पर उन्होंने फ्लाइट पकड़ ली थी। उन्होंने फैंस को बताया कि वह सेफ हैं और बाकी लोगों की सुरक्षा की प्रार्थना कर रही हैं।रिपोर्ट्स के मुताबिक, लॉस एंजेलिस में लगी इस आग से कई घर तबाह हो गए हैं। इन घरों में कुछ हॉलीवुड स्टार्स के घर भी शामिल हैं। आग की वजह से लगभग 130,000 लोगों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाया गया है।लॉस एंजिलिस के जंगल में आग मंगलवार को शुरू हुई थी और अब तक इस पर काबू नहीं पाया जा सका है। प्रियंका चोपड़ा ने भी आग का एक वीडियो अपने इंस्टाग्राम पर शेयर किया था, जिसमें आग से तबाही साफ दिख रही थी। इसमें दिख रहा था कि लोकल एडमिनिस्ट्रेशन और रेस्क्यू टीम आग बुझाने और लोगों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाने में जुटे हुए थे।

ग्लैमरस लुक में दिखीं 9 एक्ट्रेस

अपनी अदाओं से फैंस को बनाया दीवाना

बॉलीवुड एक्ट्रेस अक्सर अपने लुक्स को लेकर सुर्खियों में बनी रहती हैं। साथ ही सोशल मीडिया पर फोटोज शेयर करती हैं। हाल ही में नेशनल क्रश वामिका गब्बी से लेकर करीना कपूर तक बॉलीवुड हसीनाएं ग्लैमरस लुक्स में नजर आईं। किसी ने देसी लुक में तो किसी ने बोल्ड लुक से फैंस का दिल जीता. वामिका गब्बी ने हाल ही में इंस्टाग्राम पर अपनी नई तस्वीरें शेयर की हैं, जिनमें वह देसी आउटफिट में नजर आ रही हैं। वामिका ने पीले रंग का खूबसूरत सलवार सूट पहना है, जिसमें सफेद कढ़ाई का काम किया गया है। इस एथनिक लुक को उन्होंने लाइट मेकअप और खुले बालों के साथ पूरा किया। उनका मुस्कुराता हुआ चेहरा और ग्रेसफुल पोज फैंस का दिल जीत रहा है। तस्वीरों में वामिका ने सटल न्यूड टोन मेकअप किया है, जिसमें उनका नैचुरल ग्लो साफ झलक रहा है। उनके बालों को सॉफ्ट वेव्स में स्टाइल किया गया है, जो उनके लुक को और भी खूबसूरत बना रहा है।

मलाइका अरोड़ा इंडस्ट्री की स्टाइल क्वीन हैं। एक्ट्रेस अपनी एक्टिंग से ज्यादा फिटनेस और स्टाइलिश फैशन सेंस को लेकर लाइमलाइट में रहती हैं। 51 साल की उम्र में भी वो अपनी अदाओं से बिजलियां गिराती रहती हैं। इसी बीच मलाइका ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर रीसेंट लुक की कुछ फोटोज शेयर की हैं। जिनमें उन्होंने ब्लैक ब्लेजर कैरी किया हुआ है। ब्लेजर के साथ उन्होंने व्हाइट कलर की स्कर्ट कैरी की है। गले में खूबसूरत नेकलेस पहनकर उन्होंने अपने इस लुक को कम्पलीट किया। भूमि पेडनेकर बी टाउन की पॉपुलर एक्ट्रेस हैं। भूमि बी टाउन में लीक से हटकर फिल्में करने के लिए जानी जाती हैं। इंटरनेट पर एक बार फिर भूमि का स्टाइलिश लुक काफी तेजी से वायरल हो रहा है। भूमि के फैंस उनके इस स्टनिंग अंदाज को काफी पसंद कर रहे हैं। उन्होंने अपने इंस्टा पर कुछ फोटोज शेयर की हैं, जिनमें उन्होंने अलग-अलग ब्लैक लुक कैरी किए हैं।

चाहत पांडे के किरदार को पलटेंगे 5 वायरल वीडियो

बिग बॉस 18 में चाहत पांडे इन दिनों काफी सुर्खियों में बनी हुई हैं। हाल ही में चाहत अपनी लव लाइफ को लेकर चर्चाओं में रहीं। शो के होस्ट सलमान खान ने बिग बॉस के स्टेज पर ही चाहत की लव लाइफ एक्सपोज कर दी। हालांकि चाहत ने इसे सिरे से नाकार दिए। उन्होंने कहा कि वो सिंगल हैं और कोई भी उनकी लाइफ में नहीं हैं। इसके बाद सलमान ने एक वीडियो भी ऑडियंस को दिखाई जिसमें चाहत एनिवर्सरी मनाती दिख रही हैं। सोशल मीडिया पर भी ये काफी वायरल हुई। हालांकि अभी तक ये पता नहीं चल पाया है कि चाहत किसके साथ एनिवर्सरी मना रही थीं। चाहत का बॉयफ्रेंड एक गुत्थी बनकर रह गया। घर में चाहत का किरदार बहुत सिंपल दिखाई दे रहा है।

सलमान खान की एक्स गर्लफ्रेंड बिना शादी बनेंगी मां, इंटरव्यू में बच्ची का नाम रिवील

सलमान खान का कई एक्ट्रेस के साथ अफेयर रहा है। एक्टर ने अभी तक किसी को लाइफ का पार्टनर नहीं बना पाए हैं। लेकिन उनकी एक एक्स गर्लफ्रेंड से जुड़ी खबर सामने आ रही है जो कि बिना शादी किए ही मां बनने जा रही हैं। दरअसल ये कोई और नहीं बल्कि सोमी अली खान हैं जो मां बनने जा रही हैं। एक्ट्रेस ने एक इंटरव्यू इस बात का खुद खुलासा किया है। सोमी अली का नाम एक समय में बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान के साथ जोड़ा गया था। दोनों का रिश्ता लंबे समय तक चर्चा में रहा, लेकिन बाद में इनका ब्रेकअप हो गया। सोमी ने एक वक्त कहा था कि वह सलमान के साथ घर बसाने और उनके साथ बच्चे पैदा करने का सपना देखती थीं। हालांकि, रिश्ते के टूटने के बाद उन्होंने ये ख्वाब छोड़ दिया। हाल ही में अब सोमी अली ने कहा है कि अब वह मां बनने की ख्वाहिश रखती हैं, लेकिन किसी के साथ घर बसाने का इरादा नहीं रखतीं। उन्होंने बताया कि वह भारत के गांव से बच्ची को गोद लेकर उसकी परवरिश करना चाहती हैं। उन्होंने बताया कि भारत से उनके इमोशन जुड़े हुए हैं। उन्होंने कहा, "मेरे पूर्वज भारत-पाकिस्तान के बंटवारे से पहले भारत में ही रहते थे। बंटवारे ने हमें अलग कर दिया, लेकिन हमारे इमोशन्स आज भी जुड़े हुए हैं।" सोमी अली ने आगे बताया कि वह गोद ली हुई बेटी का नाम 'मलाला अली' रखने का सोच रही हैं। उन्होंने कहा,"मैं उसे हिंदी फिल्में दिखाऊंगी और मुझे यकीन है कि उसका क्रश आर्यन खान पर होगा।"

सलमान खान और सोमी अली का रिश्ता काफी सुर्खियों में बना रहता है। सोमी को अक्सर सलमान के खिलाफ विवादित बयान देते हुए देखा गया है। एक्टर के बारे में बात करते हुए उन्होंने बताया कि सलमान खान के साथ रिश्ता भले ही खत्म हो गया हो। लेकिन वह अपनी लाइफ में आगे बढ़ने पर अपने फैसलों पर फोकस कर रही हैं। बता दें कि सोमी अली, सलमान खान से शादी करना चाहती थीं, लेकिन उनका ब्रेकअप हो गया। सोमी ने सलमान खान के साथ रिश्ता टूटने के बाद अमेरिका वापस लौट गई थीं।

सोनू सूद की एक्शन मूवी हिट या फ्लॉप?

सोनू सूद की एक्शन क्लासिक मूवी सिनेमाघरों में रिलीज हो गई है। इस फिल्म से सोनू ने डायरेक्टर की कुर्सी भी संभाल ली। इस मूवी से उन्होंने अपना डायरेक्टोरियल डेब्यू किया है। वहीं इस धमाकेदार एक्शन-ड्रामा मूवी में सोनू के साथ जैकलीन फर्नांडिस भी एक्शन करती नजर आएंगी। रिलीज से पहले मूवी के ट्रेलर को ऑडियंस का अच्छा रिस्पॉन्स मिला था। आज यानी 10 जनवरी को सिनेमाघरों में ये मूवी रिलीज हुई। वहीं इसका पहला रिव्यू भी सामने आ गया है। आइए आपको भी बताते हैं मूवी को कितने स्टार्स मिले हैं और इसकी कहानी क्या है?

सोनू सूद इस मूवी में फतेह का किरदार निभा रहे हैं। जो पंजाब के एक छोटे से गांव मोगा में रहते हैं। फतेह की कोई फैमिली नहीं होती तो वहां एक डेयरी फार्म चलाते हैं और निमृत (शिव ज्योति राजपूत) के घर किराए पर रहते हैं। निमृत गांव में ही एक लोन ऐप में काम करती हैं। वहीं उसी ऐप के जरिए लोगों का लोन पास करवाती हैं। इस लोन ऐप का ब्याज इतना होता है कि जब तक लोग इसे चुका पाते हैं इससे पहले ही लोन ऐप के मालिक लोगों को धमकियां देना शुरू कर देता है। अब इसकी शिकायत लोग निमृत से करते हैं। काफी शिकायत आने के बाद निमृत गांव छोड़कर लोन ऐप के हेड ऑफिस दिल्ली जाकर काम करने लगती हैं।दिल्ली जाकर निमृत की कोई खैर-खबर नहीं आती। इसके बाद निमृत की मां फतेह से मदद मांगती हैं। फतेह जब इस पर रिसर्च करता है तो उसे पता चलता है कि ये लोन ऐप फर्जी है और इसे साइबर माफिया का पूरा गैंग चलता है। इसका लीडर रेजा (नसीरुद्दीन शाह) और सत्य प्रकाश (विजय राज) होते हैं। फतेह निमृत की तलाश में दिल्ली जाता है.

इस लुक से अचानक सुर्खियों में आई कैटरीना

बॉलीवुड की एक्ट्रेस कैटरीना कैफ अपनी एक्टिंग के साथ-साथ अपने लुक्स को लेकर भी फैंस के बीच चर्चा में रहती हैं। विक्की कौशल से शादी के बाद से कैटरीना कैफ अब कम ही नजर आती हैं और ऐसे में एक्ट्रेस ने फैंस को अपने न्यू ईयर लुक से चौंका दिया है। न्यू ईयर पर कैटरीना कैफ अचानक सुर्खियों में आ गई हैं, सोशल मीडिया पर कैटरीना वेस्टर्न लुक खूब वायरल हो रहा है, इसके साथ ही लोग विक्की कौशल की भी तारीफ कर रहे हैं।

कैटरीना कैफ ने 1 जनवरी को इंस्टाग्राम पर अपनी दो फोटो शेयर की हैं, जिसमें उन्होंने बेहद की खूबसूरत शॉर्ट ड्रेस पहनी हुई है। कैटरीना फोटो में काले पोल्का डॉट्स वाली एक सफेद शॉर्ट ड्रेस में स्माइल करते हुए पोज दे रही हैं। एक फोटो में जमीन की तरफ देखते हुए हंस रही हैं और उनकी इस मुस्कान पर उनके फैंस फिदा हो गए हैं।

न्यू ईयर 2025 का स्वागत कैटरीना कैफ और विक्की कौशल ने एक-साथ एक शानदार लोकेशन पर किया है, जिसकी झलक एक्ट्रेस के पीछे दिखाई दे रही है। ऐसे में कैटरीना की इन शानदार तस्वीरों के लिए उनके फैंस एक्ट्रेस के पति विक्की कौशल की फोटोग्राफी की तारीफ कर रहे हैं। हालांकि दोनों ही फोटोज में नजर नहीं आ रहे हैं।

कैटरीना कैफ की शादी के बाद से ही लगातार उनकी प्रेगनेंसी की खबरें सामने आ रही है।

टीम इंडिया ने आयरलैंड को पहली बार हराया

प्रतिका और तेजल ने जड़े अर्धशतक

राजकोट.

वीमेंस टीम इंडिया ने दमदार प्रदर्शन करते हुए राजकोट में जीत दर्ज की है. भारत ने वनडे सीरीज के पहले मैच में आयरलैंड को 6 विकेट से हराया. आयरलैंड ने पहले बैटिंग करते हुए 239 रनों का लक्ष्य दिया था. इसके जवाब में भारत ने 34.3 ओवरों में मैच जीत लिया. उसके लिए प्रतिका रावल और तेजल ने दमदार प्रदर्शन किया. इन दोनों ने अर्धशतक लगाए. टीम इंडिया ने यह मैच स्मृति मंधाना की कप्तानी में खेला. टॉस जीतकर पहले बैटिंग करने उतरी आयरलैंड की शुरुआत खराब हुई. टीम ने 27 रनों के स्कोर पर पहला विकेट गंवाया. सारा फॉर्ब्स महज 9 रन बनाकर आउट हुईं. इसके बाद उना रेमंड 5 रन बनाकर पवेलियन लौटीं. वहीं ओरला 9 रन बनाकर चलती बनीं. लेकिन कप्तान गैबी लेविस ने एक छोर संभाले रखा. उन्होंने 15 चौकों की मदद से 92 रन बनाए. ली पॉल ने भी अच्छा

परफॉर्म किया. उन्होंने 7 चौकों की मदद से 59 रन बनाए.आयरलैंड के दिए लक्ष्य का पीछा करने उतरी भारतीय टीम ने 34.3 ओवरों में मैच जीत लिया. टीम इंडिया की शुरुआत अच्छी हुई. कप्तान मंधाना और प्रतिका के बीच मजबूत साझेदारी हुई. मंधाना ने 6 चौकों और 1 छक्के की मदद से 41 रन बनाए. वहीं प्रतिका ने 10 चौकों और 1 छक्के की मदद से 89 रन बनाए. तेजल नंबर पांच पर बैटिंग करने आयीं. उन्होंने नाबाद अर्धशतक जड़ा. तेजल की इस पारी में 9 चौके शामिल रहे. उन्होंने 53 रन बनाए. ऋचा घोष ने नाबाद 8 रन बनाए.

प्रिया मिश्रा ने की शानदार गेंदबाजी

भारत के लिए प्रिया ने शानदार गेंदबाजी की. उन्होंने 9 ओवरों में 56 रन देकर 2 विकेट झटके. इसके साथ ही 1 मेडन ओवर भी निकाला. तितास साधु और सयाली को 1-1 विकेट मिला. दीप्ति शर्मा को भी 1 सफलता हाथ लगी.

विजय हजारे ट्रॉफी में शमी की टीम को मिली हार

करनाल.

विजय हजारे ट्रॉफी के प्री क्वार्टर फाइनल मैच में करनाल के अर्श कबीर व अंशुल कांबोज ने बल्लेबाजी व गेंदबाजी में धमाल मचाया। इसकी बदौलत गुजरात के वडोदरा में बंगाल के साथ आयोजित मैच में हरियाणा टीम ने 72 रन से मुकाबला जीत लिया।

वीरवार को आयोजित इस मैच में हरियाणा टीम की शुरुआत अच्छी रही। अर्श कबीर ने पहले ओवर में ही तेज गेंदबाज मोहम्मद शम्मी को दो छक्के जड़े। हालांकि वह 19 गेंदों में तीन छक्कों की मदद से 121.05 की स्ट्राइक रेट से 23 रन बनाकर मुकेश कुमार की गेंद पर श्यान घोष के हाथों लपके गए। हरियाणा टीम की ओर से

निशांत सिंधु ने 67 गेंदों पर 64 रन तथा पार्थ वत्स ने 77 गेंदों पर 62 रन बनाए। सुमित कुमार 32 गेंदों पर 41 रन बनाकर नाबाद रहे। जवाब में बंगाल की टीम 43.1 ओवर में 226 रन बनाकर ऑल आउट हो गई।

विजय हजारे ट्रॉफी में पहुंचने वाले करनाल के दोनों ही युवा खिलाड़ी करनाल की राणा ब्रदर्स अकादमी के हैं। यह काफी सालों से मेरठ रोड स्थित इस अकादमी में अभ्यास कर रहे हैं। अकादमी के संचालक सतीश राणा ने बताया कि अर्श कबीर बेहतरीन ताबड़तोड़ बल्लेबाजी के लिए परिचित हैं तो ऑलराउंडर खिलाड़ी अंशुल कांबोज की गेंदबाजी में धाक है। दोनों ही खिलाड़ियों ने अपने बेहतरीन प्रदर्शन की बदौलत यह मुकाम पाया है।

स्टेट ए ट्रॉफी में देश में सर्वाधिक रन बनाकर हुआ चयन विजय हजारे ट्रॉफी में करनाल का अर्श कबीर पहली बार खेल रहा है। इस ट्रॉफी में उनका यह चयन अंडर 23 स्टेट ए ट्रॉफी के नौ मैच में देश में सर्वाधिक 840 रन बनाने व बल्लेबाजी में बेहतरीन प्रदर्शन के कारण हुआ। अर्श कबीर के चयन पर उनके मुख्य कोच सतीश राणा व पिता विवेक रंगा ने एसोसिएशन का आभार जताया है। उन्होंने अर्श कबीर के उज्जवल भविष्य की कामना तथा निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है।

अफगानिस्तान को बॉयकॉट करने की मांग?

नई दिल्ली. चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का आगाज 19 फरवरी से होगा, लेकिन उससे पहले ही अफगानिस्तान क्रिकेट टीम के खिलाफ मैचों को बॉयकॉट करने की मांग उठने लगी है. बॉयकॉट करने की खबरों के बीच अफगानिस्तान टीम को चैंपियंस ट्रॉफी से निष्कासित किए जाने की मांग भी उठने लगी है. अब तक इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका इस टीम के खिलाफ मैच को बॉयकॉट करने की बात कह चुके हैं.ऐसा क्यों हो रहा है? इसके पीछे की वजह है.

पहले टी20 में ही हो गया था विवाद

बल्ला लेकर मारने दौड़ा भारतीय क्रिकेटर

नई दिल्ली. चैंपियन्स ट्रॉफ़ी 2025 से पहले भारतीय टीम इंग्लैंड के साथ पांच मैचों की टी20 सीरीज खेलेगी। इस सीरीज की शुरुआत 22 जनवरी से होने जा रही है। भारत और इंग्लैंड के बीच टी20 क्रिकेट में हमेशा कांटे की टक्कर देखने को मिलती है। इन दोनों देशों के बीच पहला टी20 मुक़ाबला आज से 18 साल पहले 2007 में खेला गया था। तब भारत ने इंग्लैंड को बुरी तरह हराया था।

टी20 वर्ल्ड कप 2007 का 21वां मुक़ाबला भारत और इंग्लैंड के बीच खेला गया था। दक्षिण अफ्रीका के डरबन के किंग्समीड स्टेडियम में खेले गए इस मुक़ाबले में भारतीय ऑलराउंडर युवराज सिंह का बल्ला इस कदर चला कि पूरी दुनिया आज तक उस मुक़ाबले को नहीं भूल पाई है। युवराज ने इस मुक़ाबले में एक ही ओवर में छह छक्के जड़े थे। इन छक्कों की मदद से युवराज ने मात्र 12 गेंद पर अर्धशतक भी बनाया था। यह उस समय टी20 क्रिकेट के इतिहास का सबसे तेज शतक था। युवराज ने उस मुक़ाबले में 16 गेंद पर सात छक्के और तीन चौके की मदद से 58 रन बनाए थे। इस दौरान उन्होंने

इंग्लैंड के दिग्गज तेज गेंदबाज स्टुअर्ट ब्रॉड को छह गेंद पर छह छक्के मारे थे।

दरअसल भारतीय बल्लेबाजी के दौरान 18वें ओवर में इंग्लिश ऑलराउंडर एंड्रयू फ्लिंटॉफ और युवराज सिंह एक दूसरे से भिड़ गए। फ्लिंटॉफ के ओवर की चौथी और पांचवीं बॉल पर युवी ने लगातार 2 चौके जड़ दिये। इस बात से फ्लिंटॉफ बुरी तरह बौखला गए और युवराज को कुछ कहा। जवाब में युवराज उन्हें बल्ला दिखाते हुए उनकी तरफ बढ़े। लेकिन अंपायर के बीच-बचाव के बाद दोनों शांत हो गए।

लेकिन फ्लिंटॉफ का गुस्सा युवराज ने स्टुअर्ट ब्रॉड पर निकाला और उनके अगले ओवर में छह गेंद पर छह छक्के जड़ दिये।

फ्लिंटॉफ ने सपने में भी नहीं सोचा था कि युवी को गुस्सा दिलाना इतना भारी पड़ सकता है। इस मुक़ाबले में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में चार विकेट खोकर 218 रन बनाए थे। युवराज के अलावा सलामी बल्लेबाज गौतम गंभीर ने 41 गेंद पर 58 और वीरेंद्र सहवाग ने 52 गेंद पर 68 रनों अक योगदान दिया था।

जवाब में इंग्लैंड की टीम 20 ओवर में 6 विकेट खोकर 200 रब ही बना पाई और 18 रन से मुक़ाबला हार गई। इंग्लैंड के लिए विक्रम सौलंकी ने 31 गेंद पर 41 और केविन पीटरसन ने 23 गेंद पर 39 रन बनाए। भारत के लिए तेज गेंदबाज इरफान पठान ने तीन और आरपी सिंह ने दो विकेट झटके थे।

प्रेमानंद महाराज के आश्रम में पहुंचे विराट-अनुष्का

नई दिल्ली.

पिछले कुछ सालों से खराब फॉर्म से गुजर रहे टीम इंडिया के पूर्व कप्तान विराट कोहली अपनी पत्नी और बच्चों के साथ प्रेमानंद महाराज के आश्रम पहुंचे। कोहली इससे पहले भी यहां आ चुके हैं, जब सिर्फ वामिका का जन्म हुआ था। टी20 वर्ल्डकप 2024 के फाइनल को छोड़ दे तो विराट कोहली का बल्ला पूरे टूर्नामेंट में शांत रहा था। उसके बाद रनों के लिए तरसते रहे।

न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ उनके खराब फॉर्म का असर टीम के प्रदर्शन पर दिखा। न्यूजीलैंड ने जहां क्रिकेट इतिहास में पहली बार भारतीय सरजमीं पर टेस्ट सीरीज जीती तो ऑस्ट्रेलिया ने 10 साल के बाद बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी को अपने नाम कर लिया। जिसके बाद कोहली एक बार फिर प्रेमानंद महाराज के आश्रम पहुंचे। कोहली के साथ उनकी पत्नी अनुष्का शर्मा और दोनों बच्चे भी मौजूद थे।

सोशल मीडिया पर विराट और अनुष्का शर्मा के प्रेमानंद महाराज के आश्रम में पहुंचने की वीडियो और फोटोज तेजी से वायरल हो रही हैं। विराट कोहली ने प्रेमानंद महाराज से कहते हुए देखे जा रहे हैं कि वह रोज उनका सत्संग सुनते हैं। वहीं अनुष्का प्रेमानंद महाराज को बता रही हैं कि जब वह पिछली बार आश्रम में आई थीं तो उनके मन में ढेर सारे सवाल थे। लेकिन उन्हीं के जैसे सवाल वहां मौजूद अन्य लोगों ने पूछ लिया तो मैं कुछ पूछ नहीं पाई थी। अनुष्का ने कहा, "मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं आपसे मन ही मन बात कर रही हूं और मेरे सभी सवालों के जवाब मुझे मिलने लगे थे।"

अनुष्का शर्मा ने प्रेमानंद महाराज से सिर्फ एक चीज की मांग की। अनुष्का ने कहा कि हमें बस प्रेमभक्ति दे दो आप। इसके जवाब में प्रेमानंद महाराज ने कहा कि ये लोग बहुत बहादुर हैं, संसार का यश प्राप्त होने के बाद ये लोग प्रेमभक्ति कि तरफ मुड़ना चाह रहे हैं, जो दूसरों के लिए काफी मुश्किल है। प्रेमानंद महाराज ने आगे कहा, "भगवान के भरोसे रहो, नाम जपो, और खूब प्रेम से रहो, खूब आनंद से रहो।"

प्रेमानंद महाराज ने कहा, "ये जिस खेल से जुड़े हुए हैं, अगर उसमें विजय प्राप्त कर लेते हैं तो पूरा भारत प्रसन्न हो जाता है, भारत का बच्चा बच्चा खुश हो जाता है, पूरा भारत पटाखे फोड़ने लगता है। ये भी तो इनकी साधना है। इनका भजन यही है कि ये अपना अभ्यास करते रहे, भले ही वो खेल है लेकिन उसमें सफलता मिलती है तो पूरे भारत को आनंद मिलता है। अगर हम फेल हो रहे हैं तो हमें अपने अभ्यास पर ध्यान देना चाहिए और बीच बीच में नाम स्मरण कर लेना चाहिए। कभी कभी आप अभ्यास के बावजूद असफलता देखते हैं, ऐसे समय में आपको धैर्य रखते हुए अभ्यास करते रहने की जरूरत है। असफलता सदैव नहीं रहेगी।"

'हिंदी हमारी राष्ट्रीय भाषा नहीं'

नई दिल्ली.

भारत में हिंदी दिवस 14 सितंबर को होता है। वहीं हर साल विश्व हिंदी दिवस 10 जनवरी को मनाया जाता है। इस मौके पर पूर्व भारतीय दिग्गज स्पिनर रविचंद्रन अश्विन का एक बयान सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। जिसमें वे हिंदी भाषा को लेकर कुछ कहते दिख रहे हैं। अश्विन ने एक निजी कॉलेज के स्नातक समारोह में कहा कि हिंदी भारत की राष्ट्र भाषा नहीं है, बल्कि अधिकारिक भाषा है। अश्विन ने छात्रों से भाषा के संबंध में सवाल किया। इस दौरान अंग्रेजी और तमिल पर छात्रों की गूंज सुनाई दी, लेकिन हिंदी

का नाम लेते ही वहां सन्नाटा पसर गया। इसके बाद अश्विन ने कहा, "मुझे लगता है कि मुझे यह कहना चाहिए कि हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा नहीं है, यह आधिकारिक भाषा है।"अश्विन ने आगे कहा, 'कई बार यह अटकलें लगी कि मैं कप्तानी संभालूंगा, लेकिन मैंने कभी ऐसा किया नहीं।' अश्विन ने कहा, "जब कोई ऐसा कहता है कि मैं यह नहीं कर सकता तो मैं इसे जरूर करना चाहता हूं, लेकिन जब कोई कहता है कि मैं ऐसा कर सकता हूं तो मेरी उसमें रुचि खत्म हो जाती है।"हालही में ऑस्ट्रेलिया में खेली गई बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के तीसरे टेस्ट के बाद अश्विन ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया था। उन्होंने 106 टेस्ट में 200 पारियों में 24 की शानदार औसत से 537 विकेट झटके हैं। उनका बेस्ट फिगर 59 रन देकर सात विकेट रहा। उन्होंने अपने वनडे करियर में 116 मैच खेले, जिसमें 33.20 की औसत के साथ 156 विकेट लिए।

अंजू जॉर्ज एएफआई एथलीट आयोग की अध्यक्ष नियुक्त

नई दिल्ली.

लंबी कूद की महान खिलाड़ी अंजू बॉबी जॉर्ज को बुधवार को भारतीय एथलेटिक्स महासंघ के नौ सदस्यीय एथलीट आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है, जिसमें छह महिलाएं हैं और भाला फेंक स्टार नीरज चोपड़ा सबसे प्रमुख पुरुष सदस्य हैं। पिछले साल अक्टूबर में हुए चुनावों के बाद बुधवार को आयोग का अनावरण किया गया। दो बार के ओलंपिक पदक विजेता नीरज चोपड़ा एएफआई की कार्यकारी परिषद द्वारा परामर्श के बाद नामित चार सदस्यों में से एक हैं। आयोग के अन्य दो पुरुष सदस्य 3000 मीटर स्टीपलचेजर अविनाश साबले और नवनिर्वाचित एएफआई अध्यक्ष बहादुर सिंह सागू हैं, जो 2002 एशियाई खेलों में शॉटपुट स्वर्ण पदक विजेता हैं। सागू पिछले आयोग के अध्यक्ष थे।निवर्तमान एएफआई कोषाध्यक्ष मधु कांत पाठक, जो चुनावों के लिए रिटर्निंग ऑफिसर थे, ने कहा कि चुनाव उचित प्रक्रिया का पालन करने के बाद आयोजित किए गए थे। चुनाव अधिसूचना जारी की गई और अन्य नियमों और विनियमों का पालन किया गया। पांच सदस्य चुने गए।पाठक ने कहा, "बाद में कार्यकारी परिषद के साथ परामर्श

के बाद, नीरज और साबले सहित चार सदस्यों को एथलीट आयोग के सदस्य के रूप में जोड़ा गया। नीरज और साबले दोनों ने शुरू में कहा था कि वे ज्यादा समय नहीं दे पाएंगे क्योंकि वे सक्रिय एथलीट हैं, लेकिन उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया।"

निवर्तमान एएफआई अध्यक्ष आदिल सुमारिवाला कार्यकारी परिषद के पदेन सदस्य के रूप में बने रहेंगे क्योंकि वे विश्व एथलेटिक्स परिषद का हिस्सा हैं। 67 वर्षीय सुमारिवाला, जिन्होंने 2012 से लगातार तीन कार्यकालों तक एएफआई अध्यक्ष के रूप में कार्य किया, वर्तमान में विश्व एथलेटिक्स के कार्यकारी बोर्ड के सदस्य हैं।एएफआई योजना आयोग के अध्यक्ष ललित भनोट ने वार्षिक आम सभा की बैठक के समापन दिवस पर घोषणा की, उन्होंने कहा, "हमने पिछले साल एएफआई संविधान में संशोधन किया था, जिसके अनुसार विश्व एथलेटिक्स परिषद में शामिल कोई भी व्यक्ति एएफआई कार्यकारी परिषद का पदेन सदस्य होगा।" मंगलवार को सुमारिवाला ने जोर देकर कहा था कि वह कहीं नहीं जा रहे हैं और एएफआई के नए पदाधिकारियों का मार्गदर्शन करने तथा संस्था के प्रवक्ता के रूप में भी काम करने के लिए मौजूद रहेंगे। बुधवार को सागू ने घोषणा की कि सुमारिवाला समिति के अध्यक्ष भी होंगे जो सरकार के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय निकायों के साथ संपर्क बनाए रखेगी। इसके अलावा, वह एएफआई के नैतिक आयोग के सदस्य भी होंगे।

मलेशिया ओपन : सात्विक-चिराग क्वार्टरफाइनल में पहुंचे

प्रणय का सफर हुआ समाप्त

नई दिल्ली.

भारत के सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की पुरुष युगल जोड़ी ने मलेशिया सुपर 1000 बैडमिंटन टूर्नामेंट के क्वार्टरफाइनल में प्रवेश किया लेकिन एच एस प्रणय दूसरे दौर में हारकर बाहर हो गये। सात्विक और चिराग की जोड़ी ने 43 मिनट तक चले राउंड 16 मुकाबले में मलेशिया के एन अजरिन और टान डब्ल्यूके को 21-15 21-15 से शिकस्त दी। अब क्वार्टरफाइनल में सातवीं वरीयता प्राप्त भारतीय जोड़ी का सामना थिउ सिन ओंग और ऐ यि टियो की स्थानीय प्रबल दावेदार जोड़ी से होगा।

दूसरी तरफ, प्रणय पुरुष एकल के दूसरे दौर में चीन के लि शि फेंग से हारकर बाहर हो गए। भारत के 32 साल के खिलाड़ी को एक घंटे 22 मिनट तक चले मैच में सातवें वरीय लि से 8-21, 21-15, 21-23 से हार मिली। मालविका बंसोड को महिलाओं के राउंड 16 में चीन की

तीसरी वरीयता प्राप्त और दुनिया की पांचवें नंबर की खिलाड़ी हान युए से 18-21 11-21 से शिकस्त मिली। इससे पहले त्रिसा जॉली और गायत्री गोपीचंद की महिला युगल जोड़ी को राउंड 16 मैच में चीन की जिया यि फान और झांग शु जियान से 21-15, 19-21, 19-21 से पराजय झेलनी पड़ी।

इससे पहले एच एस प्रणय और उभरती हुई शटलर मालविका बंसोड ने 8 जनवरी को मलेशिया ओपन में क्रमश: पुरुष और महिला एकल के शुरूआती मुकाबले जीतकर प्री क्वार्टरफाइनल में प्रवेश किया। वहीं, भारत के लिए तनीषा क्रास्टो और ध्रुव कपिला तथा सतीश कुमार कुरूणाकरन और आद्या वरियथ की जोड़ी ने भी सुपर

1000 टूर्नामेंट के मिश्रित युगल प्री क्वार्टरफाइनल में जगह बनाई। छत से पानी टपकने के कारण देर से हुए मुकाबले में प्रणय ने कनाडा के प्रतिद्वंद्वी ब्रायन यांग को एक घंटे 29 में 21-12, 17-21, 21-15 से शिकस्त दी।

मिक्स्ड डबल्स में ध्रुव कपिला और तनीषा क्रास्टो की जोड़ी को 44 मिनट में चीन की चेंग जिंग और झांग चि की सातवीं वरीयता प्राप्त जोड़ी से 13-21, 20-22 से शिकस्त मिली। सतीश करूणाकरन और आद्या वरियथ की एक अन्य मिक्स्ड डबल्स जोड़ी को मलेशिया के सून हुआर गोह और शेवोन जेमी लाई से 10-21 17-21 से हार मिली।

बॉक्सिंग में विद्यार्थियों ने जीते पदक

नई दिल्ली. गुरु काशी विश्वविद्यालय तलवंडी साबो में हुई ऑल इंडिया इंटर यूनिवर्सिटी बॉक्सिंग (महिला व पुरूष) चैंपियनशिप में गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। उन्होंने विभिन्न की प्रतियोगिताओं में पदक हासिल किए हैं। विश्वविद्यालय पहुंचने पर खिलाड़ी पदकों के साथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई से मिले। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने खिलाड़ियों को सम्मानित किया तथा कहा कि खिलाड़ियों ने चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन करके विश्वविद्यालय को गौरवान्वित किया है। प्रो. मनीष कुमार व डा. एसबी लुथरा ने बताया कि महिला वर्ग में विश्वविद्यालय की बॉक्सिंग टीम की खिलाड़ी नीतू रानी ने 48 किलोग्राम प्रतियोगिता में कांस्य पदक हासिल किया। पुरुष वर्ग में 67 किलोग्राम प्रतियोगिता में अंकित पंघाल तथा 75 किलोग्राम प्रतियोगिता में मनदीप ने कांस्य पदक हासिल किया है। चैंपियनशिप में खिलाड़ियों का मार्गदर्शन कोच लक्ष्मण व प्रदीप सावंत ने किया।

मुझे ऑस्ट्रेलिया में दिया गया 'जहर'

नई दिल्ली.

सर्बियाई टेनिस स्टार नोवाक जोकोविच ने एक चौंकाने वाला खुलासा किया है। जिसने खेल जगत को हिला के रख दिया है। जोकोविच ने कहा कि 2022 ऑस्ट्रेलियन ओपन के वीज़ा विवाद के समय हिरासत के दौरान उन्हें 'जहरीला' खाना खिलाया गया था। साल 2022 में जोकोविच को मेलबर्न में हिरासत में लिया गया था। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया ओपन 2022 से पहले यात्रा दस्तावेजों में गलत जानकारी दी थी। दरअसल जोकोविच को 2022 ऑस्ट्रेलियन ओपन से पहले ऑस्ट्रेलिया के कोविड-19 नियमों के उल्लंघन का दोषी पाया गया था और उनका वीजा रद्द कर दिया गया था। इसके बाद उन्हें ऑस्ट्रेलिया से डपिोर्ट कर दिया गया। कानूनी कार्यवाही के दौरान, उन्हें मेलबर्न के एक होटल में ही रहना पड़ा था।जोकोविच ने जीक्यू को बताया, "मुझे कुछ हेल्थ इशू थे। मुझे एहसास हुआ कि मेलबर्न के उस होटल में मुझे ऐसा खाना खिलाया गया था जिससे मेरे अंदर जहर हो गया था। मेरे खाने में जहर था। जब मैं सर्बिया वापस आया तो मुझे कुछ पता चला। मैंने कभी किसी को सार्वजनिक रूप से यह नहीं बताया शरीर में सीसा और पारा सहित भारी धातुओं का स्तर

चिंताजनक रूप से उच्च स्तर पर था।

सर्ब ने आगे कहा कि 2022 के विवाद के बावजूद उन्हें ऑस्ट्रेलियाई लोगों से कोई शिकायत नहीं है। हालांकि, 12 महीने बाद, वह खिताब जीतने के लिए मेलबर्न लौट आए। उन्होंने कहा, "पिछले कुछ सालों में ऑस्ट्रेलिया या दुनिया के दूसरे देशों में मिलने वाले बहुत से ऑस्ट्रेलियाई लोग मेरे पास आए और मेरे साथ किए गए व्यवहार के लिए मुझसे माफ़ी मांगी, क्योंकि उस समय वे अपनी ही सरकार से शर्मिंदा थे। उन्होंने कहा, "और मुझे लगता है कि सरकार बदल गई है और उन्होंने मेरा वीज़ा बहाल कर दिया है और मैं इसके लिए बहुत आभारी हूं। मुझे वहां रहना बहुत पसंद है और मुझे लगता है कि मेरे नतीजे टेनिस खेलने और उस देश में होने की मेरी भावना का प्रमाण हैं।"जोकोविच ने कहा,"कुछ साल पहले मुझे उस देश से निर्वासित करने वाले लोगों से मैं कभी नहीं मिला। मुझे उनसे मिलने की इच्छा नहीं है। अगर मैं किसी दिन उनसे मिलूंगा, तो भी ठीक है। मैं हाथ मिलाकर आगे बढ़ने के लिए खुश हूं। ऑस्ट्रेलियन ओपन टूर्नामेंट के निदेशक क्रेग टिली ने जोकोविच के दावों पर बात करने से इनकार कर दिया। टिली ने कहा,"मैं इस सवाल का जवाब नहीं दूंगा। मैं वहां नहीं जाऊंगा।

CMYK

आज पहली वर्षगांठ पर रामलला धारण करेंगे खास वस्त्र

अयोध्या.

> मंदिर में होगा भव्य आयोजन

अयोध्या में भव्य राम मंदिर में भगवान रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का एक साल पूरा होने जा रहा है. हिन्दू तिथि के मुताबिक राम मंदिर को एक साल 11 जनवरी को पूरा होगा. श्रीराम जन्मभूमि ट्रस्ट की ओर से मंदिर की पहली वर्षगांठ का बेहद भव्य तरीके से मनाने की तैयारी की गई है. इस दिन भगवान रामलला को पीतांबर वस्त्र धारण कराए जाएंगे. जिनकी बुनाई और कढ़ाई सोने और चांदी के तारों से की गई है. राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के वार्षिकोत्सव को भव्य तरीके से मनाने की तैयारी की गई है. इसके तहत मंदिर में कई तरह धार्मिक अनुष्ठान और सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे, जिसमें कई बड़ी हस्तियां शामिल हो सकती है.

ये समारोह तीन दिन तक 11, 12 और 13 जनवरी तक चलेगा. सुबह से ही ये उत्सव शुरू हो जाएगा. जिसका शुभारंभ रामलला के अभिषेक से होगा. सुबह दस बजे से रामलला का पूजन और विधि विधान के साथ पूजा पाठ शुरू हो जाएगी.

इस खास अवसर पर रामलला को पीतांबर वस्त्र धारण कराए जाएंगे. ये वस्त्र दिल्ली में तैयार हो रहे हैं, जिन पर सोने और चांदी के तारों से कढ़ाई और बुनाई की जा रही है. सर्दियों के मौसम की वजह से उनका अंगवस्त्र और धोती व दुपट्टा पश्मीना से तैयार किए गए हैं. पीतांबर वस्त्रों के साथ रामलला स्वर्ण मुकुट, स्वर्ण हार और अन्य आभूषण भी धारण करेंगे.

रामलला का अभिषेक उसी तरह पंचामृत और सरयू के पानी से होगा जैसे प्राण प्रतिष्ठा के दिन किया गया था. जलाभिषेक के साथ 12.20 बजे रामलला की महाआरती की जाएगी और अनुष्ठान होगा.

इस दौरान मंदिर परिसर में भी कई तरह के कार्यक्रम किए जाएंगे. जिनमें रामकथा से लेकर विभिन्न अनुष्ठान और यज्ञ शामिल हैं. इस बार आम लोगों को भी इसका हिस्सा बनने का मौका मिलेगा.

भव्य तरीके से मनाने की तैयारी

अयोध्या में भगवान राम मंदिर के उद्घाटन पिछले साल 22 जनवरी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों किया गया था. एक रिपोर्ट मुताबिक जिस दिन रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की गई उस दिन पौष शुक्ल की द्वादशी तिथि थी. इस साल 2025 में पौष शुक्ल की द्वादशी 11 जनवरी यानी शनिवार की पड़ रही है. इसलिए प्राण प्रतिष्ठा की वार्षिक वर्षगांठ इस दिन मनाई जाएगी. इस उत्सव को वार्षिक द्वादशी भी जा रहा है.

गणतंत्र दिवस परेड में दिखेंगे 10 हजार खास मेहमान

नई दिल्ली.

कर्तव्य पथ पर 76वें गणतंत्र दिवस समारोह की परेड देखने के लिए पैरालिंपिक दल के सदस्य, बेहतर प्रदर्शन करने वाले गांवों के सरपंच, हथकरघा कारीगर और वन एवं वन्यजीव संरक्षण कार्यकर्ता समेत करीब 10,000 विशेष अतिथियों को आमंत्रित किया गया है।

रक्षा मंत्रालय ने एक बयान में कहा- ``विविध पृष्ठभूमि वाले स्वर्णिम भारत के इन निर्माताओं में विभिन्न क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले और सरकार की योजनाओं का सर्वोत्तम उपयोग करने वाले लोग शामिल हैं।

राष्ट्रीय महत्व के आयोजनों में जनभागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से लगभग दस हजार विशेष अतिथियों को गणतंत्र दिवस परेड देखने के लिए निमंत्रण भेजा गया है। मंत्रालय ने कहा कि इन विशेष अतिथियों को विभिन्न क्षेत्रों से चुना गया है।

इनमें 31 श्रेणियां शामिल हैं मसलन: सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले गांवों के सरपंच, आपदा राहत कार्यकर्ता, सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले जल योद्धा, वाइब्रेंट विलेजों के अतिथि, पूर्वोत्तर राज्यों के अतिथि, सर्वश्रेष्ठ पेटेंट धारक, सर्वश्रेष्ठ स्टार्ट-अप, सड़क निर्माण श्रमिक आदि।

महाकुंभ क्षेत्र में शंकराचार्यों का भव्य प्रवेश

प्रयागराज.

> दर्शन के लिए उमड़ा जन सैलाब

संगम तीरे बसे महाकुम्भ नगर में सनातन धर्म की सभी धाराओं और सम्प्रदाय का संगम हो रहा है. सनातन के ध्वज वाहक अखाड़ों के बाद अब शंकराचार्यों का प्रवेश भी महाकुम्भ नगर में हो गया है. कुम्भ क्षेत्र में ज्योतिष्पीठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी की प्रवेश यात्रा निकाली गई जिसमें हजारों संतो ने हिस्सा लिया. महाकुम्भ में जन आस्था के सबसे बड़े आकर्षण अखाड़ों के प्रवेश के बाद अब चारों पीठ के शंकराचार्यों के प्रवेश का सिलसिला भी शुरू हो गया है. ज्योतिष पीठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती की प्रवेश मंगलम यात्रा शहर के रामबाग से निकाली गई. पत्थरचट्टी राम बाग से शुरू हुई इस प्रवेश यात्रा में हजारों की संख्या में विभिन्न अखाड़ों के साधु संत और वेद बटुक ब्रह्मचारी भी शामिल हुए . प्रवेश मंगलम यात्रा में सबसे आगे शंकराचार्य की धर्म पताका और इसके पीछे आदि शंकराचार्य की सवारी चल रही थी. उनके पीछे शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती का भव्य रथ चल रहा था जिसमें सभी दिशाओं से आए मठों , महंत और श्री महंत और संत मौजूद रहे.

26 फरवरी तक चलेगा महाकुंभ मेला

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महाकुंभ मेले का दौरा किया. साथ ही उन्होंने सभी तैयारियां की समीक्षा ली. महाकुंभ को लेकर सरकार ने अपनी सभी तैयारियां पूरी कर ली है. महाकुंभ के स्वागत के लिए प्रशासन ने अपनी कमर कस ली है. मेले की शुरुआत 13 जनवरी से होने जा रही है, जो 26 फरवरी तक चलने वाला है. इस मेले में देश दूनिया से करोड़ की संख्या में लोग पहुंच रहे हैं.

समलैंगिक विवाह को लेकर दायर याचिकाएं खारिज

नई दिल्ली.

सुप्रीम कोर्ट ने 'सेम सेक्स मैरिज' यानी समलैंगिक विवाह को लेकर दायर पुनर्विचार याचिकाएं खारिज कर दी है. शीर्ष अदालत ने समलैंगिक जोड़ों के विवाह के मामले में पूर्व में दिए फैसले पर फिर से विचार करने से साफ इनकार कर दिया. सुप्रीम कोर्ट के पांच जजों की पीठ ने कहा कि समलैंगिक विवाह पर अदालत के दिए गए फैसले में कोई कमी नहीं है. इसलिए इसमें कोई सुधार करने की जरूरत नहीं है. शीर्ष अदालत के जस्टिस बीआर गवई, बीवी नागरत्ना, सूर्यकांत, पीएस नरसिम्हा और दीपांकर दत्ता की पीठ ने सेम सेक्स मैरिज पर यह अहम फैसला सुनाया है. कोर्ट में अक्टूबर 2023 के फैसले पर पुनर्विचार करने की मांग को लेकर याचिका दाखिल की गई थी जिसमें समलैंगिक विवाह को वैध मानने से इंकार किया गया था. शीर्ष अदालत ने समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता नहीं दी थी.

कानून सेम सेक्स मैरिज को मान्यता नहीं देता

सुप्रीम कोर्ट के पूर्व सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ और जस्टिस एस रविंद्र भट, हिमा कोहली और पीएस नरसिम्हा की संविधान पीठ ने 17 अक्टूबर 2023 को समलैंगिक विवाह को मान्यता देने के खिलाफ फैसला सुनाया था. तत्कालीन सीजेआई की अगुवाई वाली पीठ ने लैंडमार्क जजमेंट में कहा था कि वर्तमान कानून समलैंगिक जोड़ों के विवाह करने को मान्यता नहीं देता है. अगर आगे इसकी कोई जरूरत होती है इसके लिए कानून बनाना संसद पर निर्भर है.

डोनाल्ड ट्रंप को आज मनी केस में सजा दी जाएगी

नई दिल्ली.

अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की कई कोशिशों के बाद भी आज नई दिल्ली. आज यानी 10 जनवरी को उनको हश मनी केस के मामले में सजा सुनाई जाएगी. जहां ट्रंप को 20 जनवरी को देश के राष्ट्रपति के रूप में शपथ लेनी है, वहीं शपथ ग्रहण समारोह से 10 दिन पहले उनकी सजा का ऐलान होना है.

आज नवनिर्वाचित राष्ट्रपति ट्रंप को भारतीय समयानुसार रात 8 बजे न्यूयॉर्क कोर्ट में सजा सुनाई जाएगी. हालांकि, हश मनी केस को देख रहे जज जुआन मर्चन ने इस बात के संकेत पहले ही दे दिए हैं कि ट्रंप को जेल की सजा नहीं सुनाई जाएगी, साथ ही उन पर जुर्माना या प्रोबेशन नहीं लगाया जाएगा. इस के बाद पूरी दुनिया की निगाहें इस बात पर टिकी हुई है कि ट्रंप को आखिर इस मामले में क्या सजा दी जाएगी. हश मनी केस साल 2016 से जुड़ा हुआ है. जिसमें कथित रूप से ट्रंप पर एडल्ट स्टार को 1 लाख 30 हजार डॉलर देने का आरोप है. ट्रंप पर आरोप है कि उन्होंने एडल्ट स्टार को अपने संबंधों पर चुप्पी साधने के लिए पैसे दिए. हालांकि, ट्रंप इन सभा आरोपों को खारिज कर चुके हैं.

26 साल की युवती से गैंगरेप

चंडीगढ़. हरियाणा के यमुनानगर में तीन दरिंदों ने एक महिला से हैवानियत की है. महिला एक चौक पर खड़ी थी और इस दौरान ट्रक सवार तीन लोगों ने उसे जबरन ट्रक में खींच लिया और फिर गैंगरेप किया. पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और आरोपियों की तलाश कर रही है. जानकारी के अनुसार, यमुनानगर में 6 जनवरी की रात की यह घटना है. 26 साल की महिला से ट्रक में सवार तीन लोगों ने महाराणा प्रताप चौक के पास खींच लिया और फिर उसके साथ गैंगरेप किया. करीब 2 घंटे तक दरिंदे यमुनानगर की शहर में ट्रक दौड़ाते रहे और महिला से हैवानियत करते रहे. जैसे ही महिला को खींचकर ट्रक में बिठाया तो एक युवक ने ट्रक के पीछे ई-रिक्शा लगा दी और ट्रक को रोकने की कोशिश की. लेकिन वह भी महिला को बचा नहीं पाया.

इसरो रचेगा इतिहास, हो सकता है स्पैडेक्स' प्रयोग

नई दिल्ली. इसरो ने कहा कि महत्वाकांक्षी स्पेस अंतरिक्षयान धीरे- धीरे एक दूसरे के करीब आ यानी आज डॉकिंग प्रक्रिया शुरू हो सकती है। 'स्पैडेक्स' मिशन के तहत भारत अंतरिक्ष यान को प्रदर्शित करेगा। इस सफलता के साथ ही भारत 'डॉकिंग' प्रौद्योगिकी में सक्षम दुनिया का चौथा डॉकिंग एक्सपेरिमेंट (स्पैडेक्स) के दोनों रहे हैं। अगर सब कुछ ठीक रहा तो शुक्रवार हालांकि इसरो ने इसकी पुष्टि नहीं की है। 'डॉक' और 'अनडॉक' करने की क्षमता को अमेरिका, रूस और चीन के बाद अंतरिक्ष देश बन जाएगा।

तकनीकी समस्या के कारण डॉकिंग प्रक्रिया अंतरिक्षयानों को 225 मीटर तक की दूरी तक स्थगित कर दी गई थी डॉकिंग के लिए दोनों लाना है, लेकिन इस कोशिश के दौरान के दौरान तकनीकी समस्या के कारण डॉकिंग प्रक्रिया स्थगित कर दी गई थी। इसरो को डॉकिंग प्रक्रिया को दो बार स्थगित करना पड़ा है। पहले यह प्रक्रिया सात जनवरी को होनी थी। इसे पहले नौ जनवरी तक टाला गया गया था। नौ को भी यह प्रक्रिया पूरी नहीं हो सकी।

तिरुपति भगदड़ मामले में 2 एफआईआर दर्ज

नई दिल्ली.

> मृतकों के परिवारों को 25 लाख की सहायता मिलेगी

आंध्र प्रदेश के तिरुपति बालाजी मंदिर में मची भगदड़ की घटना के सिलसिले में दो प्राथमिकी दर्ज की गई हैं. इस बात की जानकारी पुलिस ने दी. तिरुमला स्थित भगवान वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में भगदड़ मचने से कम से कम छह श्रद्धालुओं की मौत हो गई और 40 अन्य घायल हो गए. जिन्हें इलाज के लिए अलग-अलग अस्पताल में भर्ती कराया गया है. यह भगदड़ उस समय मची जब वैकुंठ द्वार दर्शनम के लिए सैकड़ों श्रद्धालु टिकट पाने की कोशिश कर रहे थे.

प्राथमिकी भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) की धारा 194 के तहत दर्ज की गई है, वहीं अब सीएम चंद्रबाबू नायडू घायलों और मृतकों के परिजनों के लिए मुआवजे की घोषणा की है. सीएम चंद्रबाबू नायडू ने कहा, "मृतकों के परिवारों को 25 लाख रुपए की सहायता राशि और संविदा पर नौकरी दी जाएगी. 35 घायलों को दो-दो लाख रुपए की सहायता राशि दी जाएगी.

जो अप्राकृतिक मौतों से संबंधित है. पुलिस ने बताया कि शिकायत में आरोप लगाया गया है कि जब एक बीमार शख्स को बाहर निकालने के लिए गेट खोले गए तो इसी दौरान भीड़ ने आगे बढ़ने की कोशिश की जिसकी वजह से अचानक से भगदड़ मच गई. वहीं एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि मजिस्ट्रेटी शक्तियां प्राप्त राजस्व अधिकारियों को उनके कर्तव्य के तहत विभिन्न स्थानों पर तैनात किया गया था और उनकी शिकायतों के आधार पर प्राथमिकियां दर्ज की गईं.

बीजेपी में 41 उम्मीदवारों के लिए मंथन

नई दिल्ली.

> जल्द आएगी दूसरी लिस्ट

विधानसभा चुनाव के लिए बीजेपी की दूसरी लिस्ट आज जारी हो जाएगी. पहली लिस्ट में बीजेपी ने 29 उम्मीदवारों की घोषणा की थी. बाकी बची 41 सीटों पर आज मंथन होगा. आज जेपी नड्डा के घर पर बीजेपी कोर ग्रुप की बैठक है. इस बैठक में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह भी शामिल होंगे. इस बैठक के बाद शाम साढ़े 6 बजे केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक होगी.

प्रधानमंत्री मोदी इस बैठक की अध्यक्षता करेंगे. बैठक में केंद्रीय चुनाव समिति के सभी नेता शामिल होंगे. केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक शाम 6.30 बजे बीजेपी मुख्यालय में होगी. दिल्ली में बीजेपी उम्मीदवारों की सूची आज देर रात या कल सुबह जारी होगी. कांग्रेस का पूरा फोकस दिल्ली में अपनी खोई हुई सियासी जमीन को हासिल करने की है. पिछले लगातार दो बार से कांग्रेस को विधानसभा चुनाव में एक भी सीट पर जीत नहीं मिली. वहीं, बीजेपी भी पिछले 27 साल के इंतजार को खत्म करना चाहती है.

बीजेपी ने अपनी पहली लिस्ट में चार सीटिंग विधायकों को टिकट दिया है. बाकी तीन मौजूदा विधायकों का टिकट होल्ड पर है. हो सकता है दूसरी लिस्ट में उनका नाम हो. नई दिल्ली सीट से अरविंद केजरीवाल के खिलाफ प्रवेश वर्मा को उतारा है. पहली लिस्ट में दो महिलाओं को टिकट दिया गया था. बीजेपी की पहली लिस्ट में वो उम्मीदवार भी शामिल थे, जो कांग्रेस और आम आदमी पार्टी से बीजेपी में आए हैं.

दिल्ली में 10 साल से आम आदमी पार्टी की सरकार

आम आदमी पार्टी ने अपने सभी उम्मीदवारों का ऐलान कर दिया है. उधर, कांग्रेस ने भी कुछ सीटों पर अपने प्रत्याशी घोषित कर दिए हैं. दिल्ली में सभी दलों ने अपनी-अपनी सियासी बिसात बिछाने में जुट गए हैं. बीजेपी, कांग्रेस और आम आदमी पार्टी दिल्ली सत्ता पर काबिज होने की जंग लड़ रही हैं. आप लगातार चौथी बार सत्ता हासिल करना चाहती है. दिल्ली में पिछले 10 सालों से आम आदमी पार्टी की सरकार है.